आवश्यक सूचना।

पाठकों से सूचित किया जाता है कि यह पुस्तक श्रीयुत बाबू भैरूँदानजी हाकिम कोठारी की ओर से भेंट दी जायगी। अतएव जिन सज्जनों को इसकी आवश्यकता हो, वे निम्न लिखित पतासे मँगवावें।

भैरूँदानजी हाकिम कोठारी।

नं० ७ हनामगरा, कलकत्ता।

श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला गुच्छक (१)

श्री नित्यस्मरण-पाठमाला
और
स्नात्र पूजा

संशोधक—

वृहद् (बड़) गच्छीय श्री पूज्य जैनाचार्य

श्रीचन्द्रसिंह सूरी शिष्य

पण्डित काशीनाथ जैन

आर्थिक साहाय्य कर्त्ता

श्रीयुक्त रावतमलजी भैरूदानजी हाकिम कोठारी

तृतीय संस्करण ।

वीर संवत् २४५२] मूल्य पठन [विक्रम सम्वत् १९८३

प्रकाशक
जमनालालजी कोठारी
उदयपुर।



कलकत्ता
२०१, हरिसन रोडके नरसिंह प्रेसमें
पण्डित काशीनाथ जैन
द्वारा मुद्रित

प्रस्तावना।

हर कोई आस्तिक-समाजके लिये प्रभु-भक्तिसे बढ़कर और कोई विशेष उपादेय चीज संसारमें नहीं। ईश्वर भक्तिके अनेक उपायोंमें उनके विविध गुणोंका स्तुति और स्तोत्रो द्वारा स्मरण करना एक मुख्य और अवश्य उपाय है। यही कारण है कि हमारे परम आस्तिक जैन सम्प्रदायके अनेक धुरन्धर आचार्यों ने विविध भाषाओंमें असंख्य स्तुति और स्तोत्रोंकी रचना कर स्वयं भगवद्-भक्तिका अपूर्व लाभ प्राप्त कर अन्य जीवोंके लिये भी उसका रास्ता सरल कर दिया है। अब आवश्यकता है केवल उन उत्तम २ स्तुति स्तोत्रों को और उसे ठीक २ समझनेके लिये अन्यान्य साहित्यके ग्रन्थो को भी प्रकाशित करनेकी, जिससे सर्व कोई सुगमतासे उसका लाभ उठा सकें।

बड़े आनन्द की बात है कि हमारे परम

पूज्य, प्रात स्मरणीय, बृहत्खरतर-गच्छाचार्य व्याख्यान-वाचस्पति, जगम युगप्रधान भट्टारक श्री १००८ श्री जिन-चारित्र सूरीश्वरजी महा राजने अन्य व्यर्थ आडम्बरोंमें जोरशोरसे बहते हुए जैन-समाजके समय और धन व्ययके प्रवाहको रोककर, उसे साहित्य प्रकाशनके एकात-पुण्यानुबध कार्य में लगानेका निश्चय ही नहीं, बल्कि तदनुसार प्रयत्न भी शुरू कर दिया है, जिसके फल-स्वरूप "श्री अभयदेव-सूरि-ग्रन्थमाला" नामक एक ग्रन्थसीरीज भी तीन वर्षसे प्रारम्भ कर दी गई है, जिसमे अब तक विविध-विषयकी सात-साठ पुस्तकें भी निकल चुकी हैं और कई एक प्रेसमें छप भी रही है।

यहाँ पर मैं श्रीयुक्त रावतमलजी भेरूदानजो हाकिम कोठारी को जो कि धनीश होने पर भी नम्र, साहित्य प्रेमी, उदार-प्रकृति, सरल एव दृढ धर्म-रुचि होनेसे जैन-सम्प्रदायके एक

भूषण रूप है, अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होने उक्त श्रीजी महाराजके इस शुभ प्रयत्नमे सर्व प्रथम योग-दान किया है। आपने उक्त ग्रन्थमालाके प्रथम गुच्छकका सर्व-व्यय देकर उसको अमूल्य वितरण किया है, इतना ही नहीं, उस ग्रन्थकी प्रथमावृत्ति-एवं द्वितीयावृत्ति भी अल्प समयमें ही वितीर्ण हो जानेसे इस तीसरी आवृत्तिका भी सर्व-व्यय उसी उत्साहसे देकर अपनी स्वाभाविक उदारता और धर्म-प्रेमका खासा परिचय दिया है। मैं समझता हूँ, हमारे और भी धनी जैन भाई यदि ऐसे ही उत्साहसे जैन-साहित्योद्धारमें रस लेते हुए अपनी उदारताका प्रवाह इस दिशामे बहावें, तो जैन-साहित्यकी बहुत कुछ उन्नति होनेमे विशेष समय न लगेगा। आशा है अन्य जैनी भाई भी ऐसे कार्यों में यथाशक्ति सहायता कर पुण्य और यशके भागी

होगे, ताकि इस ग्रन्थमालाके व्यवस्थापक-गण और भी विशेष रूपसे जैन-साहित्य को प्रकाशित करनेमें समर्थ होगे।

मुझे यह कहते बड़ी खुशी होती है कि हमारे जैन समाजमें भी अब साहित्यकी तरफ विशेष रुचि होने लगी है। थोडे ही समयमें यह 'नित्य-स्मरण-पाठमाला'के प्रथम और द्वितीय संस्करण की प्रतियाँ खतम होना ही इस बातका ज्वलंत दृष्टान्त है। इस तीसरे संस्करणमें शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है और संस्कृत-प्राकृत भाषाके अनभिज्ञ पाठकोंको भी शुद्ध उच्चारण करनेमें सुगमता हो इस हेतुसे पद-च्छेदादि भी यथास्थान किया गया है। इस आवृत्तिमें बृद्धनवकार, कल्याणमन्दिर, तिजय पहुत्त और स्नात्र पूजा आदि भी जोड़ दिये गये हैं, जो कि द्वितीया वृत्तिमें नहीं थे।

संशोधन कार्य में विशेष ध्यान देने पर भी

मेरे दृष्टि दोषसे या प्रेसके भूतोके कारण सभव है कोई भूलें रह गई हो, पाठक-गणसे नम्र प्राथना है कि वे उसे सुधार कर पढ़ने का अनुग्रह करें।

निवेदक—
सशोधक।

विषयानुक्रमणिका ।

स्तोत्राणि ।



परम माननीय धर्म परायण श्रद्धेय

बाबू रावतमलजी हाकिम कोठारी

बीकानेर निवासी।



परम माननीय धर्मनिष्ट दानवीर

श्रीमान बाबू भैरूँदानजी हाकिम कोठारी

बीकानेर



॥ अथ नवकार मन्त्र ॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाण। णमो आयरियाण। णमो उवज्झायाण। णमो लोए सव्व साहूण। एसो पच णमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ॥ १ ॥

अथ सप्त स्मरणानि

५६—अजित-शान्ति-स्तवन।

अजिअ जिअ-सव्व-भयं,संति च पसत-सव्व-गय-पाव। जयगुरु संति-गुण-करे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा)

ववगय-मगुल- भावे, ते ह विउल तव-निम्मल-सहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसतीण, सव्व-पाव-प्पसतिण । सया अजिअ-सतीण, नमो अजिअ- सतिण ॥ ३ ॥ (सिलोगो) अजिअ-जिण । सुह-पवत्तण, तव पुरिसुत्तम । नाम-कित्तण । तह य धिइ-मइ प्पवत्तण, तव य जिणुत्तम । सति । कित्तण ॥४॥ (मागहिआ) किरिया-विहि-सचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्ख-यर, अजिअ निचिअ च गुणेहि महा-मुणि-सिद्धि-गय । अजिअस्स य सति-महा मुणिणो वि अ सतिकर सयय मम निव्वुइ-कारणय च नमसणय ॥ ५ ॥ (आलिगणय) पुरिसा जइ दुक्ख-वारण, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारण । अजिअ सति च भावओ, अभयकरे सरण पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ) अरइ रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरण,सुर-

असुर-गरुल भुयग-वइ-पयय-पणिवइयं । अजि-अमहमवि अ सुनय नय-निउणमभयकर, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज-महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ [सगयं] त च जिणुत्तम-मुत्तम नित्तम-सत्तधर, अज्जव मद्दव-खति-विमुत्ति-समाहि-निहिं । संतिकर पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, सति-मुणी मम सति-समाहि-वर दिसउ ॥ ८ ॥ [सोवाणयं] सावत्थि पुव्व-पत्थिव च वर-हत्थि मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-सथिय, थिर-सरिच्छ-वच्छ मयगल-लीलाय-माण-वरगध-हत्थि-पत्थाण-पत्थिय संथवारिह । हत्थि-हत्थ-बाहु धत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिजर पवर-लक्खणो-वचिय-सोम-चारु-रूव, सुइ-सुह-मणाभिराम परम-रमणिज्ज-वर-देवदुं-दुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिर ॥ ९ ॥ [वेड्ढ-ओ] अजिय जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भय भवोह-रिउं । पणमामि अह पयओ पावं

पसमेउ मे भयव ॥ १० ॥ (रासालुद्धश्रो)
कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढम तश्रो
महा-चक्कवट्टि-भोए महा-प्पभाश्रो जो बावत्तरि
पुरवर-सहस्स वर-नगर-निगम-जणवय वई व
त्तीसा-राय-वर-सहस्साणुयाय मग्गो। चउदस
वर-रयण नव-महा-निहि-चउ-सट्ठि-सहस्स-प
वर-जुवईण सुंदर-वई चुलसीहय गय-रह सय
सहस्स-सामी छन्नवइ-गाम-कोडि सामी-श्रासी
जो भारहम्मि भयव ॥ ११ ॥ (वेड्ढश्रो)
त संति संतिकर संतिण्ण सव्व-भया। संतिं
थुणामि जिण संतिं वेहेउ मे ॥ १२ ॥ [रासा
नंदिय] इक्खाग विदेह नरीसर नर-वसहा
मुणि-वसहा नव-सारय-ससि-सकलाणण वि
गय-तमा विहुश्र-रया। श्रजिउत्तम ते श्र-गुणेहि
महा-मुणि-श्रमिश्र-बला विउल-कुला पणमामि
ते भव-भय-मूरण जग-सरणा मम सरण ॥१३॥
(चित्तलेहा) देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद हट्ठ



पयओ, सतिमह महामुणि सरणमुवणमे ॥१८॥
(ललिअ) ॥ विणओणय सिरि रइअजलि
रिसि गण सथुअ थिमिअ, विबुहाहिव धणवइ
नरवइ थुअ महिअच्चिय वहुसो । अइरु ग्गय
सरय दिवायर समहिअ सप्पभ तवसा, गयणं
गण विअरण समुइय चारण वदिअ सिरसा
॥ १६ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर गरुल
परिवन्दिअ, किन्नरोरग णमसिअ । देव कोडि
सय सथुअ, समण सघ परिवदिअ ॥ २० ॥
(सुमुहं) ॥ अभय अणह, अरय अरुय ।
अजिअ अजिअ, पयओ पणमे ॥ २१ ॥
(विज्जुविलसिअ) ॥ आगया वर-विमाण-दि-
व्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहि हुलिअ ।
ससभमोअरण-खुभिअ लुलिय-चल-कुण्डल-
गय-तिरीड-सोहन्त-मउलि-माला ॥२२॥ (वेढ-
ओ) ॥ ज सुर-सघा सासुर-सघा वेर-विउत्ता
भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-सभम-पिडिअ-

सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-वलोघा। उत्तम-कचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअगा,गाय-समोणय-भत्ति-वसागय-पजलि-पेसिअ-सीस-पणामा ॥२३॥ (रयणमाला) ॥ वदिऊण थोऊण तो जिण, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिण सुरासुरा, पमुइया स-भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तय) ॥ त महामुणि-महपि पजली, राग दोष-भय-मोह-वज्जिअ। देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं, सति-मुत्तम-महातव नमे ॥ २५ ॥ (खित्तय) ॥ अवरतर-विआरणिआहि, ललिअ-हस-वहू-गामिणिआहि। पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहि ॥ २६ ॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरतर-थण-भर-विणमिअ-गायलयाहि, मणि-कचण-पसि-ढिल-मेहल सोहिअ-सोणि-तडाहि। वर-खिखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहि, रइकर-चउर-मणोहर-

सुन्दर-दंसणियाहि ॥ २७ ॥ ॥ [चित्तक्खरा] देव-सुन्दरीहि पाय-वन्दिआहिं, वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डण-पगारएहि केहि केहि वि अवंग-तिलय-पत्त-लेह-नामएहि चिल्लएहि संगय-गयाहि, भत्ति सन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुन्ति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ) ॥ तमहं जिणचंद, अजिअं जिअ-मोहं। धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गण-देव-गणेहिं, तो देव-वहूहि पयओ पणमिअस्सा। जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडिअआहिं। देव-वरच्छरसा-बहुआहिं, सुर-वर-रइ-गुण पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्द-मीसए कए अ, सुइ-समाणणे अ सुद्ध-सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय-मेहला-

कलाव-नेउराभिराम-सद्द-मीसए कए अ देव-नट्टिआहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, नच्चिऊण अंग-हारएहिं वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तय तिलोय-सव्व-सत्त-सन्तिकारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेस हं नमामि सन्तिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नारायओ) ॥ छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झय-वर-मगर-तुरग-सिरिवच्छ-सुलछणा । दीवसमुद्द मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ॥३२॥ (ललिअयं) सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोस-दुट्ठागुणेहिं जिट्ठा । पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया । संथुआ अजिय सन्ति-पायया, होतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका) ॥ एव-तव-बल-विउलं, थुअ मए अजिअ-संति-

जिण-जुअल । ववगय कम्म-रय मलं, गइं गयं सासय विउल ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण प्पसायं,मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥३६॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं। परिसावित्रि सुह-नंदिं मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७॥ (गाहा) ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, सवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिय सन्ति-थयं। न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासन्ति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे। ता तेलुक्कु द्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्रीबृहदजितशान्तिस्तवन प्रथमं स्मरणम्।१।

(२)

॥ अथ द्वितीय लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ॥

उल्लासि क्कम नक्ख-निग्गय पहा दण्ड-च्छ लेणगिणा, वंदारूण दिसतइव्व पयड निव्वाण-मग्गावलिं । कुन्दिन्दुज्जल दन्त-कन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु क्केरे दावि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमङ्करे ॥१॥ चरम-जलहि नीरं जो मि णिज्जअलीहि, खय-समय-समीर जो जिणिज्जा गईए। सयल-नहयल वा लङ्घए जो पएहि, अजियमहव सन्ति सो समत्थो थुणेउ ॥२॥ तहवि हु बहु-माणुल्लास-भत्ति-ब्भरेण, गुण-कणमिव कित्तेहामि चिन्तामणि व्व । अलमहव अचिन्ताणन्त-सामत्थओ सि फलिहइ लहु सव्वं वञ्छिअ णिच्छिअ मे ॥३॥ सयल-जय-हिआण नाम-मित्तेण जाण, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ट थट्टं । नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ट-पायारविन्दे, सययमजिअ-सन्ती ते जिणन्दे-

भिवन्दे ॥४॥ पसरइ वर किची वड्ढए देह-
दित्ता विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती।
फुरइ परम-तित्ती होइ ससार-छित्ती, जिण-
जुअ-पय भत्ती हीअ-चिताउ-सत्ती ॥५॥ ललि-
अ-पय पयारं भूरि-दिव्वग-हारं, फुड-घण-रस-
भावोदार-सिंगार-सारं । अणिमिस-रमणिज्ज
इसण-च्छेअ-भीया, इव पुण मणिबंधाकास-
नद्दोवयारं ॥६॥ थुणह अजिअ-सती ते कया-
सेस सती, कणय-रय-पसगा छज्जए जाण
मुत्ती । सरभस परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी,
घण-थण-घुसिणंकुप्पंक पिंगीकयव्व ॥७॥
बहुविह-नय-भगं वत्थु णिच्चं अणिच्च , सदस-
दणभिलप्पालप्पमेग अणेग । इय कुनय विरुद्ध
सुप्पसिद्ध च जेसि, वयणमवयणिज्ज ते जिणे
सभरामि ॥८॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंध-
यारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त छण्णं ।
फुरइ फुड फलताणत णाणंसु पूरो, पयडमजिअ-

सति-ज्झाण-सूरो न जाव ॥९॥ अरि-करि-हरि-तिएहुएहं बु-चोराहि-वाहा, समर-डमर-मारी रुद्द-खुद्दोवसग्गा । पलयमजिअ-संतो-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतर-तमोहा भक्खरालुंखिअव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ दारु दित्त झाणग्गि-जाला-परिगयमिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं । कणय-निहस रेहा-कंत-चार करिज्जा, चिर-थिरमिहलच्छि गाढ-संथंभि-अव्व ॥११॥ अ-डवि-निवडियाण पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरताण गुत्ति-ट्ठियाण । जलिअ-जलण जाला- लिंगिआण च झाण, जणयइ लहु संतिं संतिनाहाजिआण ॥ १२ ॥ हरि-करि-परिकिण्ण पक्क-पाइक्क-पुन्न, सयल-पुहवि-रज्ज छड्डिअ आण-सज्ज । तणमिव पडिलग्ग जे जिणा मुत्तिमग्ग, चरणमणुपवन्ना हुतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहि फुल्ल-नित्तुप्पलाहि, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहि । ललिअ भुअ-

लयाहि पीण-सोणि स्थणाहि, सम-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसकिडिभ-कुट्ठ-गठि-कासाइसारा, खय जर-वण-लूआ-सास सोसोदराणि। नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कन्नाइ-रोगे, मह-जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग-थुत्त वच्छरे वा पवित्त। पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घ जेण घाएह सिग्घ ॥ १६ ॥ इय निजयाऽजिअसत्तु पुत्त। सिरि अजिअ-जिणेसर।, तह अइरा-विस सेण-तणय। पंचम-चक्कीसर। । तित्थकर। सोलसम। संति। जिण-वल्लह सथुअ।, कुरु मंगलमवहरसु दुरि-यम-खिलपि थुणतह ॥ १७ ॥

इति श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवन द्वितीयं स्मरणम्॥ २ ॥

(३)

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडामणि-किरण-रंजिअ मुणिणो । चलण-जुअल महाभय,-पणासण सथव वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण नह-मुह,-निबुड्ड-नासा विवन्नलायण्णा । कुट्ठ-महा-रोगानल,-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण,-सलिलंजलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव-दड्ढा गिरि-पाय-यव्वपत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुभिय-जलनिहि,-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे । संभंत-भय-विसंठुल,-निज्जामय-मुक्क-वावारे ॥४॥ अवि-दलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअ कूलं । पास-जिण-चलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर-पवणुद्धुय-वणदव,-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे । डज्झंत-मुद्धमिय-वहु,-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे॥६॥

जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल तिहु-अणाभोअ। जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भय तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग-भीस-ण,—फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं। उग्ग-भुअग नव-जलय,-सच्छह भीसणायार ॥ ८ ॥ मन्नं'ति कीडसरिसं, दूर-परिच्छूढ-विसम-विस-वेगा। तुह नामक्खर फुड-सिद्ध,-मंत गुरुआ नरा लोए ॥९ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर,-पुलिं द-सद्दूल सद भीमासु। भय-विहुर-वुन्न-कायर,-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्तविहव-सारा, तुह नाह ! पणाम-मत्त-वावारा। ववगय-विग्घा सिग्घ, पत्ता हिय इच्छिय ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर विआरिय-मुह महा-काय । नह-कुलिस-घायविअलिअ,-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥१२॥ पणय ससंभमपत्थिव,-नह-मणि-माणिक्क-पडिमस्स। तुह-वयणपहर-णधरा, सीहं कुद्धपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि-

धवलदंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंगनयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहरा-रावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं मुणि-वइ ! तुंग समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्खखग्गा,-भिग्घाय पविद्ध-उद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्न करि-कलह मुक्क सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय-दप्पुद्धररिउ,—नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव-पसमिण ! पास-जिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग-जलजलण-विसहर-चोरारि-मइंद-गय-रण-भयाइं । पास जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं पास-जिणिं-दस्स संथवमुआरं । भविय-जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर-निहाणं ॥१९॥ राय-भय-जक्ख-रक्खस,—कुसुमिण-दुस्सउण रिक्ख-पीडासु । संझासु ` उवसग्गे तह य रयणीसु

॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताण कइ-
णो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ,
सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥ २१ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवन तृतीयं स्मरणम् ॥

(४)

अथ गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम् ॥

त जयउ जए तित्थ, जमित्थ तित्थाहिवेण
वीरेण । सम्म पवत्तिय भव्व सत्त-सताण-
सुह-जणय ॥१॥ नासियसयल-किलेसा, निहय-
कुलेसा पसत्थ-सुह-लेसा । सिरिवद्धमाण-
तित्थस्स मङ्गल दिन्तु ते अरिहा ॥२॥ निद्दड्ढ-
कम्म-बीया, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा ।
सिद्धा ति -जयपसिद्धा, हणन्तु दुत्थाणि तित्थ-
स्स ॥ ३ ॥ आयारमायरता पच-पयार सया
पयासन्ता । आयरिआ तह तित्थ निहयकुतित्थ
पयासन्तु ॥ ४ ॥ सम्म सुअ-वायगा वायगा य
सिअवाय-वायगा वाए । पवयण पडणीय-कए

वर्णितु सव्वस्स सङ्घस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहण ज्जुय-साहूणं जणिय-सव्वसाहज्जा। तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दसण त मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग-भव्वगि-वग्ग-कय-सम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स सघस्स मगल सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव्व-सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-सघस्स ॥ ६॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि-वद्धमाण-पहुपयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायङ्ग-गयमुह-पमुक्खा । सिरि-बम्भसन्तिसहिआ, कय नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिम्बा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि वइरुट्टा, सन्ति-सुरा

दिन्तु सुरसुराणि ॥१२॥ सोलस विज्जा-देवीउ, दिन्तु सहरस सहुलं विउल। अच्छुत्ता-महि आओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ सम ॥१३॥ जिण-सासण-कय-रक्खा जक्खा चउवीस सासण सुराचि। सुहभावा सताव, तित्थस्स सया पणा-सन्तु ॥ १४ ॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे। वेयावच्चकराचि अ तित्थ-स्स हवन्तु सन्तिकरा ॥१५॥ जिण समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय-साहज्जो। गीय-रई गीअजसो, सपरिवारो सिव दिसउ ॥१६॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ। जिण सासण-ट्ठिआण, दुहाणि सव्वाणि निहणन्तु ॥१७॥ दस-दिसिपाला स-खित्तपालया नव गहा स नक्खत्ता। जोइणि-राहु-गह-काल पासकुलिअद्ध पहरेहि ॥ १८ ॥ सहकाल-कंटएहि सविट्ठि वच्छेहि कालवेलाहि। सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस्स सङ्घस्स

॥१९॥ भवणवई वाणमन्तर,-जोइस-वेमा-णिआ य जे देवा। धरणिन्द-सक्क-सहिआ, दलन्तु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलतं, गच्छइ पुरओ पणा-सिय-तमोह। ततित्थस्स भगवओ नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासणं जए जयइ। सिद्धि-पह-सासण कुपह-नासणं सव्व-भय-महण ॥ २२ ॥ सिरि-उसभसेण-पमुह हय-भय-निवहा दिसन्तु तित्थस्स। सव्व-जि णाण गणहारिणोऽणह वञ्छियं सव्व ॥ २३ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थं समप्पि जस्स। सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहस य संघस्स ॥ २४ ॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दा दिसन्तुमयल-संघस्स। इयर-सुरा वि हु सम जिण-गणहर-कहिय-कारिस्स ॥ २५ ॥ इय पढइ तिसञ्झं, दुस्सञ्झं तस्स नत्थि कि जए। जिणदत्ताणाए ठिओ सनिट्ठिअट्ठो सु

होई ॥ २६ ॥

इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामक चतुर्थं स्मरणम् ।

(५)

॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥

मय-रहिय गुण गण-रयण, सायर सायर पणमिऊण । सुगुरु-जण पारतत, उवहिव्व थुणामि त चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय-निरोहा पणट्ठ-सदेहा । पणयंगि-वग्ग-दाविय-सुह-सदोहा सगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा,समत्त-पर-तित्थ जणिय-सखोहा । पडिभग्ग-मोह-जोहा, दसिय-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुह-दाहा सिवव-तरु-साहा । सपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा सज्जो निरवज्ज गहिय-पवज्जा । सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गिरि-गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-पमुहा, गुण-गण-निवहा

सुरिद-विहिअ-महा। ताण तिसक्ष नामं, नाम न पणासइ जियाण ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरत-भवहारो। सिरिनेमि-चन्द-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि-वद्धमाण-सूरी, पयडीकय-सूरि-मंत-माहप्पो। पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससकुव्व सुह-जणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि। जुगपवर-सुद्ध-सिद्धन्त-जाण-ओ पणय सुगुणजणो ॥ ६ ॥ पुरओ दुल्लह-महिव,—ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयड। मुक्काविआ रिऊणा, सोहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि-विप्फुरन्त-सच्छन्द-सूरि मय तिमिर। सूरेणव सूरि-जिणे,-सरेण हय-महिअ-दोसेणं ॥ ११ ॥ सुक-इत्त-पत्त कित्तो, पयडिअ गुत्ती पसन्त-सुह-मुत्ती पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचद-जईसरो मत्ती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,—रयणकोसो

पणामिअ पओसो। भव-भीय-भविअ जण मण, कय सतोपो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग-पवरागम-सार,—प्परूवणा-करण-वन्धुरो धणिअ। सिरि-अभयदेव सूरी, मुणि-पवरो परम-पसम-धरो ॥ १४ ॥ कय-मावय-सतोसो, हरिव्व सारग भग-सदेहो। गय समय-दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्व-रसो ॥ १५ ॥ भीम-भव-काणणम्मि अ, दसिअ-गुरु वयण-रयण सदो-हो। नीसेस-सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणु-ओग प्पहाण-सच्चरणो। असम-मयराय महणो, उडढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥ दसिअ-निम्मल-निच्चल,-दन्त-गणोगणिअ-सावओत्थ-भओ। गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व, सूरी जिण-वल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग-पवरागम-पीऊस-पाण-पीणिय-मणा कया भव्वा। जेण जिणव-ल्लहेण, गुरुणा त सव्वहा वदे ॥ १९ ॥ विप्फु-

रिय-पवर-पवयण,-सिरोमणो वूढ दुव्वह-खमो य। जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताण-करो ॥ २० ॥ सच्चरिआण-महीणं, सुगुरुणं पारतन्तमुव्वहइ। जयइ जिणदत्त-सूरी, सिरि-निलओ पणय-मुणि-तिलओ ॥ २१ ॥

इति श्रीगुरुपारतन्त्र्यनामक पञ्चमं स्मरणम्।

(६)

॥ अथ षष्ठ स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घ,जिण-वीराणाणुगामि-सघस्स। सिरि-पास-जिणो थभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा। सिरि-वद्ध-माण-जिण तित्थ-सुत्थय ते कुणन्तु सया ॥२॥ सक्काइणो सुरा जं, जिण-वेयावच्च-कारिणो सति। अवह-रिय-विग्घ-सघा, हवन्तु ते सघ-सन्तिकरा ॥ ३ ॥ सिरि-थभणय-ट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीण। निद्दलिय-दु-

रिय-विदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइ ॥ ४ ॥ गोमुह-पमुहाय जक्खा, पडिहय पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते । कय-सगुण-सघरक्खा, हवन्तु मं-पत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया वि जिण पणया । सिद्धा-इया-समेया हवन्तु सघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्कापसा सचउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण भत्तो । सिरि-बम्भ-सन्ति-जक्खा, रक्खउ सघ पयत्तेण ॥७॥ खित्त-गिह-गुत्त-सन्ताण-देस देवा-हिदेवया ताओ । निव्वुइ-पुर-पहिआण, भव्वाण कुणतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि-चक्कधरा, वि-हिपहरिउच्छिण्ण कन्धरा धणिय । सिव-सरणा-लग्ग सघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो सङ्घ ओ सुसघेण । जिणचन्दोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहपहु म ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय-तिमिरो । जिणचदा-ऽभयदेवा,

पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु-जिण-वल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे । जिण-चन्द-जिणेसर-वद्धमाण-तित्थस्स वुड्ढि कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताण सम्म, मन्नन्ति कुणन्ति जे य कारंति । मणसा वयसा वउसा, जयतु साहम्मिआ ते वि ॥१३॥ जिणदत्तगुणे नाणा-इणो सया जे धरन्ति धारन्ति । दंसिअ-सिअ-वाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥

इति षष्ठं स्मरणम् ॥६॥

(७)

॥ अथ उवसग्गहरनामक सप्तम स्मरणम् ॥

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं । विसहर विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो,तुज्झ पणामो वि ... होइ । नर-तिरिएसु ...

जीवा, पावति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्प-पायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे, भवे पास ! जिण-चंद ! ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि ।

---

(१)

अथ श्रीभक्तामर स्तोत्रम् ।

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि प्रभाणा,--मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन ! पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल

वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभि सुर-लोक-नाथै। स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैं, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥ युग्मम्॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्। बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,—मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम्?॥ ३॥ वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षम सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या?। कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्र, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्?॥ ४॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्त। प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशो· परिपालनार्थम्?॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरी... ...। यत् कोकिल... मधौ ...ते, तच्चारु-चूत-कलिका...

रैक-हेतु ॥६॥ त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति संनिबद्ध, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रान्त लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥ मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद,—मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्त दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ! भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति? ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत्? ॥११॥ यै

शान्तराग-रुचिभि:परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि-भुवनैक-ललाम-भूत।। तावन्त एव खलु तेऽप्य-णव: पृथिव्या, यत्ते समानमपरं न हि रूप-मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र- हारि, नि शेप-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्। बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्ब वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कलाकलाप,—शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लङ्घयन्ति। ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम्? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र-यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मना-गपि मनो न विकारमार्गम्। कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं च-लित कदाचित्? ॥१५॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जित-तैलपूर, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि। गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ। जगत्प्रकाश ॥ १६ ॥ नास्तं

कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं, गम्य न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्। विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सुनाथ ? । निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ? ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा
दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग्
जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥ त्वामामनन्ति
मुनय. परमं पुमांस,-मादित्य-वर्णममलं तमस
परस्तात्। त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्य शिव शिव-पदस्य मुनीन्द्र। पन्था॰ ॥२३॥
त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण-
मीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्। योगीश्वरं विदित-
योगमनेकमेकं, ज्ञान स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्त॰
॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात्। धाताऽसि
धीर। शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्त त्वमेव
भगवन्। पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्य नम-
स्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ।, तुभ्यं नम क्षितितला-
मल-भूषणाय। तुभ्यनमस्त्रिजगत परमेश्वराय,
तुभ्य नमो जिन। भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

५

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।। दोषै-रुपात्त विविधाश्रय-जात-गर्वैं, स्वप्नान्तरेऽपि न कदा चिद्-पीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु संश्रितमुन्मयूख,-माभाति रूपममल भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो वितानं, बिम्ब रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपु कनकावदातम् । बिम्ब वियद्विलसदंशु-लता-वितान,तुङ्गो-दयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मे ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चलचामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपु कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क शुचि-निर्झर-वारिधार—मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छत्र त्रय तव विभाति शशाङ्ककान्त,-मुच्चैः स्थित स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् । मुक्ताफल-प्रकर-जाल-वि-वृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति, पर्यु -ल्लस-न्नख-मयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त , पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र !, धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृत प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर नाद-विवृद्ध-कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्ध तमापतन्त, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा-श्रितानाम् ॥३४॥ भिन्नेभ-कुम्भ गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त,-मुक्ताफल-प्रकर भूषित-भुमि-भाग । बद्ध-क्रम क्रम-गत हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रित ते ॥३५॥ कल्पान्त काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्प दावानल ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जल शमयत्य-

शेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ नील, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्। आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त शङ्क, स्त्वन्नाम नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तु-रङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलव-तामपि भूपतीनाम्। उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं, त्वत्कीर्त नात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,-वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे। युद्धे जयं वि-जित-दुर्जय-जेय-पक्षा,-स्त्वत्पादपङ्कज-वनाश्रयि-णो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभी षण-नक्र-चक्र,—पाठीन पीठ-भयदोल्वण-वाड-वाग्नौ। रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा,-स्त्रासं विहाय भवत स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत -भीषण-जलोदर-भार-भुग्ना, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशा। त्वत्पादपङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-

तुल्य-रूपा ॥ ४१ ॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घा । त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्त, सद्य स्वयं विगत बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,—सग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(२)

॥ अथ वृद्धशान्ति ॥

भो भो भव्या ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्ति-

शान्तिर्भवतु

प्रभावा,-दारोग्य-श्री-धृति मतिकरी क्लेश-वि ध्वंस-हेतु ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवाना, समस्त-तीर्थकृता जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपति सुघोषा-घण्टा-चालना-नन्तर सकल-सुरासुरेन्द्रै सह समागत्य सविनयमर्हद्भ- ट्टारक गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहित- जन्माभिषेक शान्ति मुद्घोषयति, ततोऽहं कृता-नुकारमिति कृत्वा, 'महाजनो येन गत स पन्था' इति भव्य-जनै सह समागत्य, स्नात्र पीठे स्नात्र विधाय शान्तिमुद्घोषयामि। तत्पूजा यात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यता स्वाहा॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्ता २, भगवन्तोऽर्हन्त सर्वज्ञा, सर्वदर्शि- न । त्रैलोक्य-नाथा, त्रैलोक्य-महिता, त्रै- लोक्य-पूज्या, त्रैलोक्येश्वरा, त्रैलोक्योद्यो- तकरा ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानि १, निर्वाणि २,

सागर ३, महायशः ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६; श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ६, सुतेज १०, स्वामि ११ मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति, १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्घ १६ जिनेश्वर २० शुद्धमति २१ शिवकर २२ स्यन्दन २३ सम्प्रति २४ एते अतीत-चतुर्विंशति-तीर्थंकरा ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४ सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ६, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुन्थु १७ अर १८, मल्लि १६, मुनिसुव्रत २० नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४ एते-वर्तमान-जिना ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७ पेढाल ८, पोट्टिल ६, शतकीर्ति १० सुव्रत ११,

नागम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निमम १५, चित्रगुप्त १६ समाधि १७, संवर १८ यशोधर १९; विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भद्र कर २४, एते भावि-तीर्थंकरा जिना शान्ता शान्तिकरा भवन्तु । ॐ मुनयो मुनि प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्ग मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥ ॐ श्री नाभि १ जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४, इति वर्तमानचतुर्विंशति-जिन-जनका ॥

ॐ श्री मरुदेवी १, विजया, २ सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६ पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नन्दा १०, विष्णु ११,

जया १२, श्यामा १३ सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९ पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमान-जिन-जनन्यः ॥

ॐ श्रीगोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातङ्ग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३ पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटि २१ गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४, इति वर्त्तमान-जिन-यक्षाः ॥

ॐ चक्रेश्वरी १ अजितबला २ दुरितारि ३ काली ४ महाकाली ५ श्यामा ६ शान्ता ७ भृकुटि ८ सुतारका ९ अशोका १० मानवी ११ चण्डा १२ विदिता १३ अङ्कुशा १४ कन्दर्पा १५ निर्वाणी १६ बला १७ धारिणी १८ धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका

पद्मावती २३ सिद्धायिका २४ इति वर्त्तमान चतुर्विंशति-तीर्थंकर-शासनदेव्य।

ॐ ह्रीँ श्रीँ धृति-कीर्त्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो जयन्ति ते जिनेन्द्रा। ॐ रोहिणी १ प्रज्ञप्ति २ वज्रशृङ्खला ३ वज्राङ्कुशा ४ चक्रेश्वरी ५ पुरुषदत्ता ६ काली ७ महाकाली ८ गौरी ९ गान्धारी १० सर्वास्त्रमहाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अच्छुप्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ एता षोडश विद्या-देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा॥ ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु। ॐ महाश्चन्द्र-सूर्याऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहु केतु-सहिता सलोकपाला सोम-यम-वरुण कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायका ये चान्येऽपि ग्राम नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ता २ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च

भवन्तु स्वाहा॥ ॐ पुत्रमित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृत् संवन्धि-वन्धु-वर्ग सहिता नित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणो भवन्तु। अस्मिश्च भूमण्डले आयतन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक श्राविकाणा रोगोपसर्ग-व्याधि दु ख दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मङ्गल्योत्सवा भवन्तु। सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रव पराङ् मुखा भवन्तु स्वाहा॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नम शान्तिविधायिने। त्रैलोक्य-स्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये॥ १॥ शान्ति शान्तिकर श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरु। शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शान्तिर्गृहे गृहे॥ २॥ ॐ उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दु स्वप्न दुर्निमित्तादि।स-पादित-हित-सपद्, नाम-ग्रहणं जयति शान्ते ॥ ३ ॥ श्रीसघ-पौर-जन-पद,-राजाधिप-राज-सन्निवे-शानाम्। गोष्ठिक-पुरमुख्याणा, व्याहृ-

[illegible]शान्तिम् ॥ ९ ॥ श्री [illegible]
शान्तिर्भवतु, श्री पौर-लोकस्य [illegible]
श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु, श्री राजाधिपानां
न्तिर्भवतु, श्री राज-सन्निवेशानां शान्तिर्भवतु,
गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ
श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्ति [illegible]
यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं [illegible]
चन्दन-कर्पूरागुरु-धूप वास-कुसुमाञ्जलि-समेत
स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचि शुचिवपु [illegible]
वस्त्र-चन्दनाभरणालंकृत, चन्दनतिलक [illegible]
कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति [illegible]
मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं मणि [illegible]
वर्षं सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । [illegible]
गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो
जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थयर-माया सि[illegible]
देवी तुम्ह-नयर-निवासिनी अम्ह सिवं [illegible]
सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ [illegible]

शिवमस्तु सर्व-जगत , पर हित- निरता भवन्तु भूत-गणा । दोषा प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोक ॥२॥ उपसर्गा क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लय । मन प्रसन्नतामेति पूज्य-माने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥

इति वृद्धशान्ति समाप्ता ॥

(३)

अथ जिनपञ्जर-स्तोत्रम् ।

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं आचार्येभ्यो नमोनम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनम । ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं श्रीगोतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनम ॥१॥ एष पञ्च-नमस्कार , सर्व-पाप-क्षयंकर । मङ्गलाना च सर्वेषा, प्रथम भवति ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जये विजये म । कमलप्रभ-सूरीन्द्रो

जिनपरञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकाल य पठेदिदम् । मनोऽभिलषित सर्व, फल स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्य्येण, क्रोध-लोभ विवर्जित । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्त स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्ध चक्षुर्ललाटके । आचार्य श्रोत्रयोमध्ये, उपाध्याय तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्द मुख-स्याग्रे मन शुद्ध विधाय च । सूय-चन्द्र-नि-रोधेन, सुधी सर्वार्थ-सिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदन द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिन । अङ्ग-सधिषु सर्वज्ञ, परमेष्ठी शिवङ्कर ॥ ८ ॥ पूर्वाशा श्रीजिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रिय । दक्षिणाशा पर ब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ।९। पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर । उत्तरा तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरञ्जन ॥१०॥ पाताल भगवानर्हन्नाकाश पुरुषोत्तम । रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकल कुलम् ॥ ११ ॥

ऋषभो मस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने ।
सभवः कर्ण युगलं, नासिकां चाभिनन्दन ॥१२॥
ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो
विभु । जिह्वा सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो
विभु ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं
च श्रीशीतल । श्रेयासो बाहु-युगलं, वासुपूज्य.
कर-द्वयम् ॥ १४ ॥ अगुलीविमलो रक्षेद्, अन-
न्तोसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्री-
शान्तिर्नाभि मण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यक
रक्ष,—दरो रोम-कटी तटम् । मल्लिरूरू पृष्ठ-
वश, जङ्घे च मुनिसुव्रत ॥ १६ ॥ पादाङ्गुली-
र्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथ.
सर्वाङ्ग, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथिवी
जल-तेजस्क,—वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेद
शेष पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जन ॥ १८
राजद्वारे श्मशाने वा, सग्रामे शत्रु-सकटे
[illegible] -भूत प्रेत-भयाश्रिते [illegible]

अकाल मरण-प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते।
अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग पीडिते ॥२०॥
डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा ग्रह-गणार्दिते।
नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत्
॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, य स्मरेज्जिनपञ्जरम्। तस्य किञ्चिद्भय नास्ति, लभते सुख सम्पदम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेद, य स्मरत्यनुवासरम्। कमलप्रभराजेन्द्र,—श्रिय स लभते नर ॥ २३ ॥ प्रात समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, य स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम्। आसादयेत्स कमलप्रभाख्य,—लक्ष्मी मनो-वाञ्छित पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-गच्छे, देवप्रभाचार्य-पदाब्जहस । वादीन्द्र-चूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरु श्रीकमल-प्रभाख्य ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीजिनपञ्जर-स्तोत्र सपूर्णम् ॥

———o———

(४)

अथ श्रीऋषिमण्डल-स्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षर-संलक्ष्य,-मक्षर व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वाला-सम नाद-बिन्दु-रेखा-समन्वितम् ॥ १ ॥ अग्नि-ज्वाला-समाक्रान्तं, मनो-मल-विशोधकम् । देदीप्यमान हृत्पद्मे, तत्पद नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचक परमेष्ठिन । सिद्धचक्रस्य सद्बीज, सर्वत प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ई-शेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनम । ॐ नम. सर्व-सूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नम ॥ ४ ॥ ॐ नम सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम । ॐ नम-स्तत्त्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नम ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेतदर्हदाद्यष्टक शुभम् । स्था-नेष्वष्टसु विन्यस्त, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्य पद शिखा रक्षेत्, पर रक्षेत्तु मस्तकम् । तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥

पञ्चमं तु मुखे रन्तेत्, षष्ठं रन्तेच्च घण्टिकाम्। नाभ्यन्तं सप्तमं रन्तेद्, रन्तेत् पादान्तमष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्व-प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्व्यब्धि-पञ्चपान्। सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दु-स्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्या, पञ्चातो ज्ञानदर्शन—चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तसमलंकृत ॥१०॥ ॐ ह्राँ। ह्रीँ। ह्रुँ। ह्रूँ। ह्रेँ। ह्रैँ। ह्रौँ। ह्रः। असिआउसा-ज्ञान-दर्शनचारित्रेभ्यो नमः। जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधि समावृतः। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट-काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥ तन्मध्यसंगतो मेरु, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारामण्ड-लमण्डितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीज-मध्यास्य सर्वगम्। नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ल-लाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं
बहुलं [illegible]
सारं सारतरं घनम् ॥१४॥

सात्त्विक राजस मतम्। तामस चिरसवुद्धं, तैजस शर्वरीसमम् ॥१५॥ साकार च निराकार, सरसं विरसं परम्। परापर परातीत, परपरपरापरम् ॥१६॥ एक वर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम्। पञ्चवर्णं महावर्णं, सपर च परापरं १७ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृ त भ्रान्तिवर्जितम्। निरञ्जनं निराकारं, निर्लेप वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरब्रह्म-सबुद्ध, बुद्ध सिद्ध मत गुरु। ज्योतीरूप महादेव, लोकालोक-प्रकाशकम् ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्त, सरेफो बिन्दुमण्डित। तुर्य-स्वर-समायुक्तो, बहुधा नाद-मालित ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिता. सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमा'। वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगता ॥२१॥ नादश्चन्द्र-समाकारो, बिन्दुर्नील-समप्रभ। कलारुण-समासान्त, स्वर्णाभ· सर्वतोमुख ॥ २२ ॥ शिर सलीन ईकारो, विनीलो वर्णत स्मृत। वर्णानुसार-सलीन, तीर्थकिन्म-

गह्लस्तुम ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नाद
स्थिति-समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सु
व्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ
कलापदमधिष्ठितौ । शिर-ई-स्थिति-संलीनौ
पार्श्व-मल्ली-जिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृत
सर्वे, हरस्थाने नियोजिता । माया बीजाक्षर
प्राप्ता,—श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गत-राग
द्वेष-मोहा सर्व-पाप-विवर्जिता । सर्वदा सर्व
कालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमा ॥२७॥ देवदेवस
यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित
सर्वाङ्ग , मा मा हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ दे
देवस्य० मा मा हिनस्तु राकिनी ॥२९॥ देवदे
मा मा हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे०
मा हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदे० मा मा हि
नस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मा मा हिन
हाकिनी ॥३३॥ देवदे० मा मा हिनस्तु याकि
॥३४॥ देवदे० मा मा हिंसन्तु पन्नगा ॥३

देवदे० मा मा हिंसन्तु हस्तिन. ॥३६॥ देवदे० मा मा हिंसन्तु राक्षसा ॥३७॥ देवदे० मा मा हिंसन्तु वह्नय ॥३८॥ देवदे० मा मा हिंसन्तु सिंहका.॥ ३९॥ देवदे० मा मा हिंसन्तु दुर्जना ॥४०॥ देवदे० मा मां हिंसन्तु भूमिपा ॥४१॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्य या भुवि लब्धय । ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरह सर्व-निधीश्वर' ॥४२॥ पाताल-वासिनो देवा, देवा भूपीठवासिन । स्वर्वासिनोऽपि ये देवा , सर्वे रक्षन्तु मामित ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधि-लब्धय । ते सर्वे मुनयो देवा, मा सरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत-वेताला , पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेव प्रभावत ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्याक्लिन्ना जिता मद-द्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री,

कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एता सर्वा महा-देव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये । मह्य सर्वा प्रयच्छ न्तु, कान्ति कीर्त्ति धृति मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुदु-प्राप्य, श्रीऋषिमण्डलस्तव । भासितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघ ॥४६॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्म-शाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य-भ्रष्टा निज राज्य, पदभ्रष्टा निज पदम् । लक्ष्मी भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न स-शय ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्या, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्त, नर स्म-रण-मात्रत ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कास्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत । तस्यैवाष्टमहासिद्धि-र्गृहे, वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखि-त्वेद, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारित सर्वदा दिव्य, सर्व-भीति-विनाशकम् ॥५४॥ भूतै प्रेतै-र्ग्रहैर्यक्षै, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलै । वात-पित्त-

कफोद्रेकै मुच्यते नात्र संशय ॥५५॥ भूर्भुव.-स्वस्त्रयीपीठ-वर्त्तिन शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फल तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्गोप्य महास्तोत्र, न देय यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते, वाल-हत्या पदे पदे ।५७। आचाम्लादि तप कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जाप, कार्यस्तत्सिद्धि-हेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने । तेषा न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापद ॥५९॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रात प्रातस्तु य पठेत् । स्तोत्रमेतद्द्ध महातेजो, जिनबिम्ब स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पद प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दित ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद्ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थान पर सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इद स्तोत्र महा-

पाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥६३॥ (इति श्रीऋषिमण्डलस्तोत्र चेपकश्लोकान्निराकृत्य मूलमन्त्रकल्पानुसारेण लिखित गणिभि श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै:, तदेवात्रास्माभिर्मुद्रितम्)

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ॥

॥ (दूहा) वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात। पास तणा गुण गावता मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारगे अणहलपुरे, अहमदावादे पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभ दिन घड़ी, मुहुरत एक मडाण। प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विशाला मगलीक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचौजो (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण माहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हु तीजो । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि ‒‒‒ती जी‒

(ग०) ॥५॥ जागंतो जच जेहनै कहिये, सुहणो तुरकनैं आपै जी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुम्हो सतापै जी (गु०) ॥६॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी । अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर वध वधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुम्फ, लाछि घणी घर जास्यै जी (गु०) ॥८॥ मारग पहिलो तुम्फनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चेट्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी (गु०) ॥६॥ (दूहा) ॥ मनसु बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । वीवी नें सुहणा तणो, सभलावै स-हिनाण ॥ १० ॥ बीवी बोले तुरकने, वडा देव है कोय । अवस तास परगट करो, नहीतर मारे सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीये, पहली वाधे पाज । सुहणा माहे सेठने, सभलावै जल-राज

॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही जच्च आयो राते, सारथवाहने सुहरणे जी । पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०) ॥१३॥ पांचसें टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहु चाडे थानिक, प्रतिमा गुण सभारेजी (एम०) ॥१४॥ तुम्हने होसी वहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस प्रणमोश तेहना पाया, प्रह उठोने थुणजे जी (ए०) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुतो जी । पाटण माहें सारथवाहु, हीडे तुरकने जोतो जी (ए०) ॥१६॥ तुरकें जाता दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी । सकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावे वहु लाडे जी (ए०) ॥१७॥ मुझ घरि प्रतिमा तुम्हनें आपु, पास जिणेसर केरी जी । पाचसें टक्का जो मुझ आपे, मोल न मागु फेरी जी (ए०) ॥१८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, था-

नक पहुंतो रंगे जी। केसर चन्दन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी (ए०) ॥ १६ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहैं, श्रीसघने सुर साखै जी (ए०) ॥ २० ॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी (ए०) ॥२१॥ (दूहा) ॥ इक दिन देखे अवधसुं, परिकर पुरनो भङ्ग। जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभङ्ग ॥ २२ ॥ सुहणो आयें सेठने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्यैं अति घणी, प्रतिमा तिहा पहु चाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहा अछे, तुझनें मुझने जाणि। सका छोड़ी काम करि, करतो मकरि सकाणि ॥२४॥ (ढाल) ॥ पास मनोरथ पूरा करें, वाहण एक वृषभ जोतरें। परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥२५॥ वारै कोस आव्या

जेनले, प्रतिमा नवि चाले तेतलं । गोठी मनह विमासण थई, पास मुवन मड़ावुं सही ॥ २६ ॥ श्रा श्रटवी किम करूँ प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावु किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्री संघ रहस्ये किहा, सिलावटो किम आवे इहा । चिन्तातुर थयो निद्रा लहे, यत्तराज आवीने कहे ॥ २८ ॥ गुहली उपर नाणो जिहा, गरथ घणो जाणीजे तिहा । स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणी उघटस्यै खाणि ॥ २६ ॥ श्रीफल सजल तिहा किल जूओ, अमृत जलनी सरसी कूओ । खाग कुत्रा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छै नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे कोड पराभवियो किसमिसे । तिहा थकी तुं इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानगे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीने पूरू आस,

पास तणो मडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जिमें खीर खाँड घृत चूरमो । घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थभ २ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्ग मंडप रलियामणो रसे, जोता मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मांडे आवास । दिवस विचारी डडो घड्यो ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण वेटा श्रीपास । महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं साभली, तवन मांहि सूधी साकली । गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परने पछे ॥ ३८ ॥ (दोहा) ॥

...यच जगि, तेहनो अकल स...

रूप । प्रीत करे श्रीसङ्घने, देखाडे निज रूप ॥ ३६ ॥ गउडो गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सानिध करे श्री सङ्घने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणा लहै भोग, विघन निवारे टाले रोग । पवित्र थई समरे जे जाप, टाले सगला पाप सताप ॥४२॥ निरधननो घरि धन नो सुत, आपे अपुत्रीयाने पुत्र । कायरने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पग । ठाम नहीं तेहने द्यै ठाम, मनवंछित पूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने द्यै आधार, भवसायर उतारे पार । आरतियानो आरत भंग, धरे ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समस्या सहाय दीयै यच राज, तेहना मोटा अछे दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश

गूंगाने वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भजण रजण अवतार । बधन तूटे वेणो तणा, श्री पार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्त जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार । विष धरनो विष ऊतरे, सभामें जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानी चाल) उजितु २ उज उपसम धरो, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपते । भूत ने प्रेत झोटिग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणते (उ) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन वरण सर्प विच्छू विष, वालिका वालमेवा भखंते (उ०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंक-

णी, फोटका मोटका दोष हुंते। दाढ उदर-तणी कोल नोला तणी, स्वान सोयाल विकराल दते ॥ ५३ ॥ (उ०) धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटते। लखमी लोढुं मिले सुजस वेला उले, सयल आस्या फले मन हसते (उ०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीड़ा टले, उतरे सूल सीसग भणते। वदन वर प्रीतसु प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्ते (उंजितु) ॥ ५५ ॥
इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समासम्

॥ श्री गौतम स्वामिजी का रास ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो, पणमिवि पभणिसु सामोसाल, गोयम गुरु रासो। मण तणु वयण एकत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जबूदीव सिरि

भरह खित्त, खोणी तल मडण, मगह देस सेणिय नरेश, रिउ दल चल खंडण। धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहा गुण गण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा॥ २॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ भूवलय पसिद्धो, चाउदह विज्जा विविह रुव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर॥ ३॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पकज जल पाडिय, तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभीर सिधु, चगम चय चाडिय॥४॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जण जपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या सिंजिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय॥५॥ नय वुध नय गुरु कविण

कोथ, जसु आगल रहियो, पच सया गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जबूदीव भरह वासमि, खोणीतल मडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहा, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजान ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविह सघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी सपत्तो, चउविह देव निकायहि जुत्तो ।८। देवहि समवसरण तिहा कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिहासन बेठा, ततखिण मोह दिगत पइट्ठा ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव दुदुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहा देवा,

चउसठ इन्द्रज मागे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवरजग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसता, जोजन वाणि व-खाण करता। जाणिवि वर्द्धमान जिण पाया सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कत समो-हिय जलहलकता, गयण विमाणहि रणरणकता। पेखवि इन्द्भूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयमजपे, इण अवसर कोपें तणु कपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणता इम कांइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण सपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह ससारतारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिण-वर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार

सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो, हु कारो कर सचरिय, कवणसु जिणवरदेव तो । जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुध वधू, आवती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वडर विवर्जित जतुगण, प्रातीहारिज आठ तो । सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमक्रिय चितवए, सेवतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो, एह असभव सभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो । तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख ससय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥१६॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहि नाम्यो सीस तो, पच सयासुं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो । बधव सजम सु-

णिवि करे, अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेशे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो। विहुं उपवासें पारणो ए, आपणपे विहरंत तो, गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चटियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो, जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो, बोधिबीज सजाय मने, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो, दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय सरो। समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपजेए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहा २ दीजें दीख, तीहां केवल ऊपजे ए, आप कने अण-

हुंत, गोयम दीजें दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय, एणिछल केवल नाण, रागज राखे रग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा-पद सेल, वदे चढ चउवीस जिण, आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर सचरिय, तापस पन्नर सएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अग-अम्हा संगति न उपजे ए, किम चढसे दृढ़ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चितवे ए, तो मुनि चढियो वेग, अलबवि दिन-कर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्फन्न, द-डकलस ध्वजवड सहिय, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि सठिय जिणह बिंब, पणमवि मन उल्लास, गोयम वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो

जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्यो पुडरीक, कडरिक अध्ययन भणी। वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रनिवोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खाड घृत आण, अमिय बूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे। पंच सया शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु सयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २६ ॥ पञ्च सया जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय, पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जाणे जणवि पीयूष, गाजती घन मेघ जिम, जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसे, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वदइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥३१॥ भास ॥

समियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्ल-
सिय, विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस वहुत्तर
सवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय
कमल सघँ सहिय, आवियो ए नयणानद, नयर
पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम
सामि, देवसमा प्रतिबोध करे, आपणो ए तिस-
ला देवि, नदन पुहतो परमपए। वलतो ए
देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समो ए,
तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम
ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि,
आप कनासु टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण
नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलो
ए कीधलो सामि, जाणयो केवल मागसे ए,
चिन्तव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे
ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणद, भगतिहि
भोलेभोलव्यो ए, आपणो ए उचलो नेह, नाह न
सपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न

हेजँलालियो ए तिणसमे ए, गोयमचित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागे साहियो ए, केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए। तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरम पचास, गिहवासे सवसिय, तीस वरस सजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमसिय, राजग्रही नयरी ठव्यो बाणबइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहिरया लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हसा, जिम सुरतरु

यर रुणय उतमा, जिम महुयर राजीव वने, । जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंवर तारा-गण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल धनें ॥३६॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम सहसकरो । पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवई घरजिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुर तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए । जिम भूमोपति भुयवल चमके, जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वञ्छिय काज, का-मकुम्भ सहु वशि हुआ ए । कामगवी पूरे मन कामो, अष्ट महासिद्धि आवे धामो, सामो गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया वीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमिति

सोभा संभवाए। देवा धुर अरहिंत नमीजे, *विनय पहु उवभाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नामो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसता काय करीजे, देस देसातर काय भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहा परे ए ॥४४॥ चवदय सये बारोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वद्धि कल्याण करो ॥४५॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तस गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए। गोयम सामी रास भणजे, चउविह संघ रलिया

---

* यह श्री विनयप्रभ उपाध्या जी श्री जिन कुशल सूरि-जी के जिनका स्वर्गवास वि सं० १३८९ में हुआ था, शिष्य थे।

यत कीजे रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए। तिहां वेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतमस्वामि-रास सम्पूर्ण।

॥ अथ वृद्धनवकार ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मणभि-तरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्रावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरा-सि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महि-यल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ केवलि भा-सिय रीत जिके नवकार आराहै, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण भाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहुपरि, इण भाणे देव-

लोक इदपद पामे सुंदरि ॥ एह मन्त्र सासतो जपे अचिंत चितामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर भाण मज्झ चिंतवे कमल नर, कचणमय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर ॥ तिहां बेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेय-वत्थ पहरेवि पढम पय चिते नियमणि ॥ निव्वा-ख्य चउ गइ गमण पामिय सासय सुख, अ-रिहंत भाणे तुम लहो जिम अजरामर सुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ रातो धोती पहर जपे सिद्धहि पुव्वे दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो ओषध करे बुद्धि हीणजाचंथ ॥ ४ ॥ दक्खिण दिसि पखडी जपे नमो आयरिआणं, सोवनव-न्नह सीस सहित उवए सहिनाण ॥ रिद्ध सिद्ध

कारणे लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढता पच्छिम, आराहिज्जें अग पुव्व धारत मणोरम ॥ पच्छिम दिस पखडीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर तिहा नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहा फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सव्वे साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिठा ॥ मण वयण कायहि जपे जे एके झाणे, पचवन्न तिहा नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनत चोवीसी जग हुइए, होसी अवर अनत, आदि कोइ जाणे नही इण नवकारह मत ॥ ७ ॥ एसो पच नमुक्कारो पद दिसिअ गणेहि, सव्व पावप्पणासणो पद जप-

नेरेहिं ॥ वायव दिसि भाएह मंगलाणं च स-
व्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ईसाण पएसिं ॥ चिहुं
दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल
ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपे सो घण पाव
खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुओ पायालह
सामी, समलीकुअर उपन्न भिल्ल सुर लोयह
गामी ॥ रुवल कंबल बे वलद पहुता देवा क-
प्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि
जप्पे ॥ शिवकुमार मन वछिय करे जोगी लियो
मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्र-
माण ॥ ६ ॥ छींके बैठो चोर एक आकासे
गामी, अहि फिटि हुई फूल माल नवकारह
नामी ॥ वाछरू आचारत वाल जल नदी प्रवाहे,
बीध्यो कटही उयर मत्र जपियो मनमांहे ॥
चित्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पा-
लित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥१०॥
चोर धाड सकट टले राजा वसि होवे, तिरथंकर

मां होइ लाख गुण निधिनु जोने॥ माइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पोहचे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासे एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करत॥ ११॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणु, नाणहीण छउमच्छ एह गुण पार न जाणु॥ जिम सत्तुंजय तित्थराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो॥ तित्थकर गणहर पणिय चउदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुओ नवकार॥ १२॥ अड सपय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अ-क्खर सत्तेव इह जाणो परमक्खर॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह, कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्ख निवारण॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक चित्त, पंच परमेट्टि मंत्रह तणी ॅ। देज्यो

नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभय-प्रदमनिन्दितमङि घ्रपद्मम्। संसारसागरनिम-ज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वय सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्र सुविस्तृतमतिन विभुर्विर्तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय-धूमकेतो स्तस्याह-मेप किल सस्तवन करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितु स्वरूप—मस्मादृशा कथमधीश। भवन्त्यधी-शा ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवा-न्धो, रूपं प्ररूपयति कि किल घर्मरश्मे ? ॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो, नून गुणान् गणयितु न तव क्षमेत। कल्पान्तवा-न्तपयस प्रकटोऽपि यस्मा न्मीयेत केन जल-धेर्ननु रत्नराशि ? ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव

नाथ । जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णता कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग—मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको

जिन ! कथ भविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृ-
दयेन यदुत्तरन्त । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष
नून-मन्तर्गतस्य मरुत स किलानुभाव ॥१०॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावा, सोऽपि
त्वया रतिपति क्षपित क्षणेन । विध्यापिता
हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीत न कि तदपि
दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमा-
णमपि प्रपन्ना-स्त्वा जन्तव कथमहो हृदये
दधाना । जन्मोदधि लघु तरन्त्यतिलाघवेन ?,
चिन्त्यो न हन्त महता यदि वा प्रभाव ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्व-
स्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौरा ? । प्लोष-
त्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि
विपिनानि न किं हिमानी ? ॥ १३ ॥ त्वां
योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति
हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा
किमन्य-दक्षस्य सभवि पदं ननु कर्णिकाया ?

॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन क्षणेन, देह विहाय परमात्मदशा व्रजन्ति । तीव्रानला-दुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा ॥ १५ ॥ अन्त. सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्व, भव्यै कथ तदपि नाशयसे शरीरम् ? । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरय त्वदभेदबुध्या ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभाव । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमान, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥१७॥ त्वामेव वीततमस परवादिनोऽपि, नून विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्ना- । कि काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्ता जनो भवति ते तरुरप्यशोक । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, कि वा विबोधमुपयाति न जीवलोक ? ॥ १९ ॥

चित्र विभो ! कथमवाङ् मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न---सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः—श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ? ॥ २४ ॥ भो

भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन—मागत्य निर्वृ-तिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताक-लापकलितोच्छ्वसितातपत्र—व्याजात्त्रिधा धृत तनुर्ध्रुवमभ्युपेत. ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रय-पिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भ-गवन्नभितोविभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमन्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्ता-रयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थि-वनिपस्य सततस्तवव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २६ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जन-

पालक । दुर्गतस्त्वं, किंवाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपि-
स्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञान त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु ॥ ३० ॥
प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोपा—दुत्थापि-
तानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव
न नाथ । हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव
परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जदूर्जितघनौघम-
दभ्रभीम, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य
जिन । दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वके-
शविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्रालम्बभृद्भयदवक्त्र-
विनिर्यदग्नि । प्रेतव्रज प्रति भवन्तमपीरितो
य , सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदु खहेतु. ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप । ये त्रिसन्ध्य—मारा-
धयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्या. । भक्त्योल्लसत्पु-
लकपक्ष्मलदेहदेशा', पादद्वय तव विभो । भुवि
जन्म[illegible] ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ

मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवाना, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य, भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्य-

सारशरणं शरणं शरण्य—मासाद्य सादितरिपु-
प्रथितावदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान-
वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन । हा
हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य । विदिताखिलव-
स्तुसार ।, संसारतारक विभो । भुवनाधिनाथ ।
त्रायस्व देव । करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्त-
मद्य भयदव्यसनाम्बुराशे ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति
नाथ । भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि-
मपि संततिसंचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य
शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्त-
रेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिन-
नेन्द्र ।, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं
तव विभो । रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयनकु-
मुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विग-
लितमलनिचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥४४॥युग्मम्

॥ इति श्रीकल्याणमन्दिर-स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

॥ अथ तिजयपहुत्तनाम स्मरणम् ॥

तिजयपहुत्तपयासय--अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताण समयक्खित्तठिआण, सरेमि चक्क जिणंदाण ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पणरस पन्नास जिणवर समूहो । नासेउ सयल दुरिअं, भविआण भत्तिजुत्ताण ॥ २ ॥ वीसा पणयालावि य, तीसा पन्नत्तरो जिणवरिंदा । गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्ग पणासतु ॥३॥ सत्तरि पणतीसात्रि य, सट्ठी पचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभय हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंह सरसुंस, हरहुंह तह य चेव सरसुंस । आलिहियनामगब्भं, चक्क किर सव्वओ भद्द ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिखला तह य वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि

तह गोरी ॥ ७ ॥ गधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता । माणसि महमाणसिआ, विज्झा देवीओ रक्खतु ॥ ८ ॥ पन्नदसकम्मभूमिसु, उपन्नं सत्तरी जिणाण सय विविहरयणाइवन्नो-वसोहिअं हरओ दुरिआइ ॥ ६ ॥ चउतीसअइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेण ॥१०॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम—मरगयघणसन्निह विगयमोहं सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामरपूइअं वदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासो अ। जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चदणकप्पूरेण, फलए लिहिओण खालिअं पीअं । एगतराइगहभूअ—साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसय जतं सम्म मत दुवारि पडिलिहिअ । दुरिआरि विजयवत, निब्भत निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति

स्नात्र पूजा

॥ श्रीजिनाय नम ॥

॥ अथ स्नात्र पूजा ॥

॥ पांखडी गाथा ॥

चौतीसें अतिशय जुउ । वचनातिशय संजुत्त ॥ सो परमेसर देखि भवि । सिंघासण सपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिहासन बैठा जगभाण । देखो भवियण गुणमणि खाण ॥ जे दीठें तुझ निम्मल झाण । लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा ॥ तोराचरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणदा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा । (कुसुमांजलि हाथमे लेकर यह पढ़ते हुए चरणोंमें टीकी लगाना चाहिये) ॥१॥

॥ गाथा ॥

जा निजगुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव ए गत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपता । ज्योति सुरग निरत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जो निज आतम गुण आनन्दी । पुग्गल सगे जेह अफदी ॥ जे परमेश्वर निज पद लीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांज लि मेलो शांति जिणदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वेरागी चोवीस, जिणदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीशाति जिणदा ॥ (यह पढ़कर घुटनों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण सपन्न ॥ निम्मल धम्म उवएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी। भवि जन तारण जेहनो वाणी ॥ परमानंद तणी नीसाणी। तसु भगते मुझ मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा। तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीनेमि जिणंदा ॥ (यह पढकर दोनो हाथो पर टीको लगाना चाहिये) ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

जे सिद्धा सिज्जन्ति जे। सिज्जिस्सन्ति अणंत ॥ जसु ओलंबन ठविय मन। सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले। सम परिणामें जगत निहालें ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखालें। इन्द्रादिक जसु चरण पखालें ॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा, तोरा चरण कमल

चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वै-रागो चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री पार्श्व जिणन्दा ॥ (यह पढ़कर दोनों कंधो पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

सम्मदिट्ठी देसजय । साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवझाय मुणि । जो निम्मल आ-गार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

चौविह संघे जे मन धार्यो । मोक्ष तणो कारण निरधार्यो ॥ विविह कुसुम वर जात गहेवी । तसु चरणे प्रणमन्त ठवेवी ॥ कुसुमा-जलि मेलो श्री वीर जिणंदा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वै-रागो चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्री वीर जिणंदा ॥ (यह पढ़कर मस्तक पर तिलक करना चाहिये) ॥ ५ ॥

॥ इति पाखडी गाथा ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मन रग। कल्लाणक विह सथविय। करिय सुजम्म सुपवित्त सुन्दर। सय इक सत्तरि तित्थकर। इक्क समै विहरत्त महियल। चवण समैं इकवीस जिण। जन्म समै एकवीस। भत्तिय भावे पूजिया। करो सघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचिरा हुलरावती ए ढेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या। जिन भक्तिप्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आससना। करि थानक वीसनी सेवना ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता। मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करू शासन रसी। इसी भाव दया मन उल्लसी ॥ लहि परिणाम एहवु भलु। निपजावी जिनपद निरमलुं ॥ आऊ बध विचे इक भव करी। श्रद्धा सवेगथी थिर धरी

तिहांथी चविय लहे नर भव उदार । भरतें जिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान । मध्य खंडे अवतरे जिन निधान ।

॥ ढाल ॥

पुण्ये सुपना ए देखे । मनमें हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर । निर्भय केसरी सिंह । लखमी अतिह अबीह ॥ अनुपम फूलनो माला । निर्मल शशि सुकमाल ॥ तेज तरण अति दीपे । इन्द्र ध्वजा जग जोपे ॥ पूरण कलस पडूर । पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर । देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमान । तेरमें रत्न निधान ॥ अग्नि शिखा निरधूम । देखें माताजी अनुपम ॥ हरखी रायने भासें । राजा अर्थ प्रकाशें ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्ये पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमस्यें । सकल मनोरथ फलस्ये ॥

॥ वस्तु ॥

पुण्य उदय पुण्य उदय ऊपना जिण नाह। माता तव रयणी समै देखि सुपन हरपत जागिय। सुपन कहो निज कतने सुपन अरथ साभलो सोभागिय। त्रिभुवन तिलक महा गुणी। होस्यें पुत्र निधान॥ इन्द्रादिक जसु पय नमो। करस्यें सिद्ध विधान॥

॥ ढाल चन्द्रा उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कंपियो। देई अवधें मन आणंदियो॥ मुझ आतम निर्मल करण काज। भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज॥ भव अटवि पारग सत्थवाह। केवल नाणाइय गुण अगाह॥ शिव साधन गुण अकुर जेह। कारण उलट्यो आषाढ मेह॥ हरखे विकसे तव रोमराय। वलयादिकमा निजतनु न माय॥ सिहासनथी ऊठो सुरिंद। प्रणमन्तो जिण आनन्द कन्द॥ सग अड्पय पमुहा आवि तत्थ। करि

अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ । मुख भाखें ऐ खिण आज सार । तियलोय पहु दीठो उदार ॥ रे रे नि सुणो सुर लोय देव । विषयानल ता- पित तनु समेव ॥ तसु शान्ति करण जलधर समान । मिथ्या विष चूरण गरुड़वान ॥ ते देव सकल तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी हुई सनत्थ ॥ इम जम्पी शक्रस्तव करेवि । तब देव देवि हरखे सुखेवि ॥ गावे तब रम्भा गीत गान । सुर लोक हुवो मगल निधान ॥ नर खेत्रे आरज वश ठाम । जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख । जिन सासन मगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हुए सग । सयम अरथी जनने उमग । शुभ वेला लगने तीर्थ नाथ । जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्व जीव । वधाई वेधाई थई अतीव ॥ (फूल और चॉवलोसे वधाना) पीछे —

॥ इहा चैत्यवन्दन करना और धूप खेवना ॥

॥ त्रोटक ॥

॥ श्रीशाति जिननो कलश कहिसुं ए देशी ॥

श्रीतीर्थ पतिनों कलश मज्जन गाइये सुखकार । नर खेत्त मडन दुह विहण्डन भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हर्ष उच्छव थयो जग जय कार । दिसि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार ॥ निय अमर अमरी सग कुमरी गावती गुण छद । जिन जननि पासे आवि पोहती गहगहती आणन्द ॥ हे माय तैं जिनराज जायो शचि वधायो रम्म । अम जन्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म ॥ तिहा भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार । तिहा करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जन कार ॥ वर राखड़ी जिन पाणि बाधी दियें इम आसीस । जुग कोड़ कोड़ी चिर जीवो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इक विसानी ॥

जग नायकजी त्रिभुवन जन हित कार ए। परमातमजी चिदानन्द घन सार ए॥ जिन रयणीजी दश दिस उज्जलता धरै। शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्रने सचरै॥ जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरै। तिण अवसरजी इंद्रासन पिण थरहरै॥

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसन इन्द्र चितै कवण अवसर ए बण्यो। जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिही आनन्द ऊपन्यो॥ निज सिद्ध सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो। विकसत वदन प्रमोद वधते देव नायक गहगह्यो॥

॥ ढाल ॥

तब सुरपतिजो घटा नाद करावए। सुर लोकें जी घोषणा एह दिरावए॥ नर खेत्रेंजी जिनवर जन्म हुवो अछै। तसु भगतेजी सुरपति मन्दर गिर गछै॥

॥ त्रोटक ॥

गढे मन्दर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणो। जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणो॥ तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालता। आपणा पातिक सर्व जास्यें नाथ चरण पखालतां॥

॥ ढाल ॥

इम साभलिजी सुरवर कोड़ी वहु मिली।
जिन वन्दनजी मन्दर गिर साहमी चली॥
सोहम पतिजी जिन जननी घर आविया।
जिन माताजी वंदो स्वामि वधाविया।

॥ त्रोटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष वहुलै धन्य हूं कृत पुण्य ए। त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी। उच्छग तुमचै वलिय थापिस आतमा पुन्ये भरी॥

धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता। धन्य श्रम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥ समकिते बीज निज आतम आरोपता। कलश पाणी मिसे भक्ति जल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे सव आव्या वही। शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हहो देवा अणाइ कालो। अदिट्ठपुव्वो तिलोय तारण। तिलोय बधु मिच्छत मोह विद्धसणो। आणाइतिह्नाविणासणो। देवाहिदेवो दिट्ठव्वो दिट्ठव्वो हियकामेहि ॥

॥ ढाल ॥

एम पभणत वण भुवन जोईसरा। देव वैमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा। केवि वर रमण वयणेण अइ उच्छगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश। कर जोड़ी सब देवगण लेइ कलश आदेश पामिय। अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुच्छत सामिय। इन्द्र कहे जग तारणो पारग अम्ह परमेस। दायक नायक धर्मनिधि करिये तसु अभिषेक॥ (जलकी थोड़ी धारा दे)

॥ ढाल ॥

॥ तीर्थ कमलवर उदक भरीने पुष्कर सागर आवे ए देशी॥

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अगें नामे। आतम निर्मल भाव करता, वधते शुभ परिणामे॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकात। सामानिक इन्द्राणी पमुहा, इम अभिषेक करत॥ पू०॥

॥ गाथा ॥

तव ईशाण सुरिंदो, सक्क पभणेइ करिस

सुपसाउ । तुम अंके महनाहो, खिणमित्त अम्ह अप्पेह ॥ ता सक्किन्दो पभणइ, साहम्मि व-च्छलम्मि वहुलाहो । आणा एव तेणं, गिन्हइ होउ कयत्था भो॥ (सर्व कलशों से स्नान करावे)

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करे प्रभु अंगे । करिय विलेपन पुष्फमाल ठवि वर आभरण अभंगे ॥ सो० १ ॥ तव सुरवर बहु जय जय रव कर निश्चे धरि आणन्द । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो भाजस्यु हि भव ब-न्द ॥ सो० २ ॥ कोड़ बत्तीस सोवन्न उवारी वाजते वरनाद । सुरपति सघ अमर श्री प्रभुनें जननीनें सुप्रसाद । आणी थापी एम पयपे अम्ह निस्तरिया आज । पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ३ ॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें तुम सुत हम आ-

धार। सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर करैं जिन भक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥ निय निय कप्प गया सहु निज्जर कहता प्रभु गुण सार। दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ५ ॥ खरतर गच्छ जिण आणा रंगी राज सागर उवझाय। ज्ञान धर्म दीपचन्द सुपाठक सुगुर तणैं सुपसाय ॥ देवचंद निज भक्ते गायो जन्म महोच्छव छंद। बोध बीज अकुरो उलस्यो सघ सकल आणंद ॥ सो० ६ ॥ इति ॥

॥ राग वेलावल ॥

इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज। तजिय विभव निज भावना, रमता शिव राज ॥ इम० १ ॥ काल अनंते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद। सपई श्रीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥ इम० २ ॥ जन्म महोच्छव इण परें, श्रावक रुचिवंत। विरचे जिन प्रतिमा तणों अनुमोदन खंत ॥ इम० ३ ॥ देवचन्द जिन पूजना-

करता भव पार । जिन पड़िमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ इति पदम । इति स्नात्रम् ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ जल पूजा ॥

दुहा ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार । कुसुमे वासित शुचि जले, करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ढाल ॥ मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलस सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहीं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान।। करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥ (छंद) हर्ष भरि अपसरा वृन्द आवे । स्नात्र करि एम आसीस भावे । जिहा लगे सुरगिरी जबुदीवो । अमतणा नाथ जीवो तु'जीवो ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ विमलकेवलभासनभास्कर । जगति जतुमहोदयकारण ॥ जिनवर

वहुमानजलौघत शुचिमन स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ओ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञान-शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जल यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा ॥ जलसे न्हवण करावे ॥

॥ अथ चंदन पूजा ॥

दुहा ॥ बावना चदन कुमकुमा। मृगमद नें घनसार ॥ जिन तनु लेपे तसु टले। मोह सन्ताप विकार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सकल संताप निवारण तारण सहु भविचित्त। परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भविनित्त ॥ निज रूपे उपयोगी धारी जिन गुणगेह। भाव चन्दन सुह भावथी टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन तनु चरचतां सकल नाकी। कहे कुग्रह उप्पाता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज म्हांकी। भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥३॥ श्लोक ॥ सकलमोहतमिस्रविनाशनं। परमशीतलभावयुतं

जिन ॥ विनयकुकुमचदनदर्शनै सहजतत्त्ववि-
काशकृतेर्चये ॥ १ ॥ ओ ह्रीँ परमपरमात्मने
अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवार-
णाय श्रीमजिनेद्राय चदन यजामहे स्वाहा
॥२॥ इति चदन पूजा ॥ केशर चदन चढ़ावे ॥

॥ अथ नवअगि भाव पूजा ॥

दुहा ॥ पर उपगारी चरणयुग अनन्त
शक्ति स्वयमेव । याते प्रथम पूजिये, आतम
अनुभव सेव (चरणोंमें टीकी) ॥ १ ॥ जानु
पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान । आतम
साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥ (गो-
ड़ोमें टीकी) ॥ २ ॥ कर पूजा जिन राजकी,
दिये सम्वच्छरी दान । ते कर मुझ मस्तक ठवू
पहुचे पद निर्वाण ॥ (हाथोमें टीकी) ॥ ३ ॥
भुजवल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय ।
रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥
(कधोमें टीकी) ॥ ४ ॥ सिर पूजा जिनराज

की, लोक शिरोमणि भाव । चउगति गमन मिटायके, पचम गति सम भाव ॥ (मस्तकमें टीकी) ॥ ५ ॥ लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम । वदन कमल वाणी सुने , पहुचे निज गुण धाम ॥ (ललाटमें टीकी) ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृन्द । सत भेद पयचिश श्रुत, अनुभव रस नो कद ॥ (कठमें टीकी) ॥ ७ ॥ हृदय कमलनी पृ-जना, सदा वसो चितमांह । गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाय (हृदयमें टीकी) ॥ ८ ॥ नाभी मंडल पूजके, षोडश दलको भाव । मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरषाय (नाभीमें टीकी) ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

दुहा ॥ जल भरि सपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजत । ऋषभ चरण अंगूठने, दायक भव-जल-अन्त ॥ १ ॥ जानु बले काउसग रह्या, वि-

चरथा देश विदेश। खड़ा २ केवल लह्या, पूजा जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान। कर कडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयूं दो अंश थी, देखी वीर अनन्त। पूजा वले भवजल तरथा, पूजो खंध महत ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली सकल सुगुण विश्राम। नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बले, बाल्यो रागनें द्वेप। हेम दहे वन खंडने, हृदय तिलोक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना, कठ विवर वरतूल। मधुर धुनी सुर नर सुनें, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जिन सेवत। त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवत। वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजत ॥ ९ ॥ उपदेशक नवतत्त्वना, तिम नव

अंग जिणंद । पूजो बहु विध भाव थी, कहे सहु वीर मुनिंद ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥ शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाब । केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥ ढाल ॥ अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी घन जाति, लाखोनो टोडर ठवो अंगी रचो बहुभाति । गुण कुसुमे निज आतम मण्डित करवा भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥ चाल ॥ जगधणी पूजता विविध फूलें, सुरवरा ते गिणे चण अमूले । खन्ति धर मानवा जिनपद पूजे, तसुतणा पाप सताप धूजे ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं पर-

मपरमात्मने पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ पुष्प चढ़ावे ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ ३ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान । मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिनने धूपदान ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपघटी जिम महमहे, तिम दहें पातिक वृन्द । आर्ति अनादिनी जावे, पावे मन आनन्द । जे जन पूजे धुपे, भवकूपे फिर तेह । नावे पावे ध्रुवघर, आवें सुरव अछह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघरे वासता धूप पूरं, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरे । धूप जिम सहज ऊर्द्धगत स्वभावे, कारिका उद्धगति भाव पावे ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सकलकर्म्ममहे धनदाहन, विमलसवरभावसुधूपन । अशुभपुद्गलसङ्गविवर्जित, जिनपते:पुरतोस्तु सुहर्षित ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । धूप यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा ॥ धूप अगरबत्ती खेवैं ॥

॥ अथ दीप पूजा ॥

॥ दोहा ॥ मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करो घृत पूर । वत्ती सूत्र कसुंवनी, करो प्रदीप मनूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ मगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीन, दो पथकी जिम आलिका मालिका मगललीन । दीपतणी सुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहोपूर्णानन्द ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन गृहे दीप माला प्रकासें, तेहथी तिमर अज्ञान नासें । निजघटे ज्ञानज्योती विकासे, तेहथी जगतणा भाव भासें ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ भविकनिर्म्मलबोधविकाशक, जिनगृहे शुभदीपकदीपन । सुगुणरागविशुद्धसमन्वित, दधतु भावविकाशकृते जना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । दीप यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीप पूजा ॥ मगलदीप चढ़ावे ।

॥ अथ अत्तत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अत्तत २ पूरसु, जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर विस्तार ॥१॥ ढाल ॥ उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अत्तत चग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रग । निज सत्ताने सन्मुख उ-नमुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्व-स्तिक एह ॥ २ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूरना जि-नप आगे, स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागे। जन्म जरा मरणादि असुभ भागे, नियत शिव सर्न रहै तासु आगै ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सकल-मगलकेलिनिकेतन, परममगलभावमयजिन । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन, दधतु नाथपु-रोत्ततस्वस्तिक ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्म-ने० । प्रत्तत यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥ इति अ त्तत पूजा ॥ अखण्ड चावल चढ़ावे ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सरस सुचि पकवान वहु, शालि दालि घृतपूर। धरो नैवेद्य जिन आगलैं, क्षुधा दोप तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ सपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर। साकर द्राख सोड़ोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतमय, करो नैवेद्य जिन आगलैं जिम मिलैं सुख अनवद्य ॥ २ ॥ चाल ॥ ढोवता भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य मागे। अम्हभणि अम्हतणो सरूप भोज्य, आपज्यौ तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सकलपुद्गलसङ्गविवर्ज्जन, सहजचेतनभावविलासक। सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभागमह स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। नैवेद्य यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति मिठाई पकवान चढ़ावै ॥

॥ अथ फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥ पत्र वीजोरू जिन करे, ठवता शिवपद देइ। सरस मधुर रस फल गिणे, इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आवा सार, अजीर वजीर दाड़िम करणा पट्वीज सफार। मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक वहुफल ढोवे तेह ॥ २ ॥ चाल ॥ फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहे सफल पामी। सकल मनुष्य य गतिभेद रंगे, ध्यावता फल समाप्ति प्रसगे ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं। वहति मोक्षफलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीला फल प्रमुख चढ़ावे ॥ इति फलपूजा ॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

॥ दोहा ॥ इम अड़विधि जिन पूजना, विरचै जे थिर चित्त। मानवभव सफलो करै, धावै समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुण मणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञानसागर उवज्झाय। तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥ सम्वत गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरो गाइयो श्रीजिनेंदु। तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ इति जिनवरवृन्द भक्ति पूजयन्ति, सकल गुणनिधान देवचन्द्र स्तुवन्ति। प्रतिदिवसमनन्त तत्वमुल्लासयन्ति, परमसहजरूप मोक्षसौख्य श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने॰। अर्घं

...॥ चार कोणें धार दीजे। इति अर्घ

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपते सुरशैलचूला सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने। दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः, कृत्वार्चनन्तु निदधाति सुवस्त्रपूजा ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवग एव विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजा तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृत । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपते, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढ़ावे ॥ इति वस्त्रपूजा ॥

॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥

अह पडिभग्गपसर, पयाहिणं मुणिवइ करिऊण। पड्ड सलूणत्तण लज्जियन्व, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिच्छेसिणुं मुह जिण वरह दीहर नयणं सलूण। न्हावइ गुरु मच्छरह भरिय, जलणं पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह

जिणवरह, तिन्नि पयाहिणि देव। तड़ तड़ शब्द करन्तिये, विज्जा विज्जजलेण ॥ ३ ॥ ज जेण विज्जत्र थुई, जलेण त तहड अत्थस-हस्स। जिनरूवा मच्छरेणवि, फुट्टड लूण तड़ तड़स्स ॥ ४ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेई, मुखे गाथा कहे ॥गाथा॥ सव्ववि मुणवड़ जलविजल, तन्तह भमणड पास। अहवि कयन्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणे विरण जल-णाहि पास, भरवि कयज्ज भावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटे भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि ले-विणं, सुरवर भावहि मुणिवई सेवणुं। पभणई जिणवर तुहपइ सरण, भय तुट्टड लब्भड सि-द्धि गमण ॥ ७ ॥ ए कही लूण उतारो जल सरण करे ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥

॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सणिठय कुणतस्स। जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छ-तुह हुयवहे पड़ण ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रचन्तो। सव्वन्नूण अ-पासे, जड़स्स भमण न सङ्कमण॥ २ ॥ अचन्त दु कर पिहू, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कय। आणा सव्वन्नूणा, न कया सुकयस्थ मूलमिण ॥ ३ ॥ यह कहकर माला पहनावे ॥

॥ अथ छुटा फूल पूजा ॥

उवणीव मगलेवो जिणाण मुह लालि सव-लिया। तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसुमवट्ठी ॥ १ ॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले आगे ॥

॥ प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरतो शान्ति तुमारी, तोरा च-रण कमलकी मे जाउं बलिहारी ॥ टेर ॥ वि-

श्वसेन अचिराजीके नदा, शातिनाथ मुख पू-
निम चदा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सो-
वनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया
॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहै,
सोलम जिनवर जग सहु मोहै ॥ जय० ॥ ३ ॥
मगल आरती भोरे कीजे, जनम २ को लाहो
लीजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ कर जोडी सेवक गुण
गावै, सो नर नारी अमर पद पावै ॥ जय० ॥
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ सध्याकी आरती ॥

ऋषभ अजित संभव अभिनदन, सुमति
पद्म सुपासकी, जय महाराजकी दीन दयाल
की आरती कीजे । टेर ॥ चद सुविधि शीतल
श्रेयास, वासुपूज्य जिनराजकी ॥ जय० ॥ १ ॥
विमल अनन्त धर्म हितकारी, शातिनाथ सुख-

॥ ३ ॥ नेमिनाथ प्रभु पाश्व चिंतामणि, वर्द्ध-
मान भव पारकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ कचन आरती
बहुविधि सफकर, लीजे अग उग्राहकी ॥ जय०
५ ॥ सकल सघ मिल आरती करत हैं, आवा-
गमय निवारको ॥ जय० ६ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य वदन ॥

श्रीजिनमन्दिरमें प्रवेश करते समय पहले
"निस्सही २' कहकर ३ प्रदक्षिणा देकर उचित
स्थानपर अक्षतसे स्वस्तिक करके सन्मुख बैठ-
कर मस्तक नीचा कर ३ वार नमस्कार करे —

इच्छामि खमासमणो वदिउ जाव णिज्जाए
निस्सिहीआए मत्थएण वदामि ॥ १ ॥

इच्छकारेण सदिसह भगवन चैत्य वदन करूँ —

दाहिने गोड़ेके सहारे बैठ कर वाया गोडा
ऊचा कर हाथ जोड़ इस प्रकार चैत्य वन्दन करे

सकलकुशलवल्लीपुष्करावर्त्तमेघो। दुरित-
तिमिरभानु' कल्पवृक्षोपमान ॥ भवजलनिधि-

पोत सर्वसंपत्तिहेतु । स भवतु सतता व. श्रेयसे पार्श्वनाथ ॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइ जिणबिम्बाइ ताइ सव्वाइ वंदामि ॥ अथ शक्रस्तव ॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थंयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीआणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरणाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणन्तमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं

णमो जिणाण जियभयाणं जे अ अईआ सिद्धा ज भविस्सति अणागए काले सपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥ जावन्ति चेइआइ उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए य सव्वाइ ताइ वदे इह सतो तत्थसताइ ॥ २ ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् जावति केवि साहू, भरहे रवय महाविदेहे अ सव्वेसि तेसि पणओ तिविहेण तिदडविरआण ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य. ॥ उवसग्गहर पास पास वंदामि कम्मघणमुक्‍ । विसहरविसनिन्नास मगलकल्लाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिगमत कठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी दुट्ठजरा जन्ति उवसाम ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा पावति न दुक्खदोहग्ग ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे चिन्तामणिकप्पपायवब्भहिए । पावति अविग्घेण जीवा अयरा-

मरं ठाण ॥ ४ ॥ इअ सथुओ महायस भत्ति-ब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहि भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

यहां स्तुति, स्तवनादि करे, पीछे मस्तकमे अंजलि कर कहे ।—

जय वीयराय जगगुरु होउ ममं तुह पभा वओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठ-फलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वंदणवत्तिआए पूअणव-त्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बो-हिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउसग्गं ॥ (पोछे खड़े होकर कहना)

अन्नत्थऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भम-लिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहु-

गामा जिणाण जियभयाण जे अ अईआ सिद्धा ज भविस्सति अणागए काले सपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥ जावन्ति चेइ-आइ उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए य सव्वाइं ताइ वदे इह सतो तत्थसंताइ ॥ २ ॥ इच्छा-कारेण सदिसह भगवन् जावति केवि साहू, भरहे रवय महाविदेहे अ सव्वेसि तेसि पणओ तिविहेण तिदडविरआण ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्सि-द्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥ उवसग्गहर पास पास वदामि कम्मघणमुक्क । विसहरवि-सनिन्नास मगलकल्लाणआवास ॥ १ ॥ विस-हरफुलिगमत कठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी दुट्ठजरा जन्ति उवसाम ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा पावति न दुक्खदो-हग्ग ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे चिन्तामणिकप्प-पायवब्भहिए । पावति अविग्घेण जीवा अयरा-

मरं ठाए ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस भत्ति-ब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहि भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

यहां स्तुति, स्तवनादि करे, पीछे मस्तकमें अंजलि कर कहे :—

जय वीयराय जगगुरु होउ मम तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठ-फलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरण च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वंदणवत्तिआए पूअणव-त्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बो-हिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउसग्ग ॥ (पीछे खड़े होकर कहना)

अन्नत्थऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भम-लिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहु-

मेहिं खलमचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

एक नवकारका काउसग्ग करना ॥ पश्चात् थुई बोलना —

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं। शांति तवो नेमि जिणं मुणिंदं॥ पासं पयासं सुगणिक्क ठाणं। भत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं॥ १ ॥

॥ पुनः ॥

अष्टापद श्री आदि जिनवर वीर पावापुरवरु। वासपूज्य चंपानगर सीधा नेम रेवा गिरिवरु॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुक्ति पहुंता मुनिवरु। चउवीस जिनवर तिहाँ वंदु सयल संघे सुखकरु॥

॥ मंगल ॥

॥ राग—धन्याश्री ॥

वाजत रग वधाई नगरवामे, वा० ॥ टेर ॥ जय जय कार भयो जिनशासन, वीर जिणदकी दुहाई ॥ नग० वा० १ ॥ सब सखियन मिल मगल गावे, मोतियन चोक पुराई ॥नग० वा०॥ केतकी चपो फूल मंगावो, जिनजीकी अगिया रचाई ॥ नग० वा० ३ ॥ न्यायसागर प्रभु चरण कमलसे, दिन २ ज्योति सवाई ॥ नग० वा० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुन० ॥

वाजत आज वधाई, या पुर ढेखोरी यहाँ आई ॥ वा० ॥ अश्वसेन वामा देवी घर पुत्र भये सुखदाई; घर २ नारी मंगल गावें फूलें अंग न समाई ॥ या० १ ॥ ढोल दमामा वीन वा- सुरी वाजे सुन हरखाई, जिनके जन्म समै करने को इन्द्र शची युत आई ॥ या० २ ॥ मेरु शिखर

ले जाय नव्हनकु फेर वनारस जाई, सौंप नृप-
तिको पाश नाम धरि ताडवनत्य कराई ॥ या०
॥३॥ किये निहाल दान दे याचक मान सकल
पहराई, चिरजीव रहो बाल हितकारी सब जी-
वन सुखदाई ॥ या० ४ ॥

॥ प्रभाती ॥

मेरु शिखर नहरावे हो सुरपति ॥ मेरु ॥
॥ टेर ॥ जन्मकाल जिनवरजीको जानी, पञ्च-
रूप करी आवे हो ॥ सु० मे० १ ॥ क्षीर समुद्र
तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे हो ॥
सु० मे० २ ॥ रत्न प्रमुख अड्जातीन कलशा,
ओषधि चूरण मिलावे हो ॥ सु० मे० ३ ॥ जिन
प्रतिमाको न्हवन करीने, बोध बीज मन भावे
हो ॥ सु० मे० ४ ॥ अनुक्रम गुणरत्नाकर फ-
रसी, जिन उत्तम पद पावे हो ॥सु०मे०५॥इति॥

॥ पुन ॥

जागो २ सिद्धारथके नन्दन, तुम मुख दे-

वत हर्ष अपार ॥ जा० ॥ प्रात समय तेरो मुख देखन, आये सुर नर थारे द्वार ॥ जा० १ ॥ दिनकर किरण प्रगट भये भूधर, सकुचित कमलिनी मिटियो अधार। तमचर सोर सुनावत चिहु दिश, धेनु सहित बछवन ही बेहाल ॥ ॥ जा० २ ॥ सुर वनिता सजोय आरतो, ऊभी गावे मंगलाचार। संग सखी आगनमें ठाढी उठो मेरे जीवन प्राण आधार ॥ जा० ३ ॥ माता वचन सुनत ही जाग्यो, सुखदायक वर्द्धमान कुमार। हरषचद प्रभु बदन विलोकत, तीन लोक भये जय जय कार ॥ जागो० ४ ॥

॥ भैरवी ॥

आज मेरो अङ्ग अङ्ग हुलसायो, पावापुर खेत्र लखायो ॥ आ० ॥ या थानक ते वीर धीरने कर्म कलंक नशायो। कातिक मास अमावसके दिन शिवपुर राज लहायो ॥ आ० १ ॥ जहा सुरपति निर्वाण कल्याणक पूजा करने

आयो। जल चदन अक्षत पुष्पादिक वसुविधि द्रव्य चढ़ायो ॥ आ० २ ॥ तदपुरी प्रकाश रुप-मणि घृत दीप भलकायो। सब सुर इन्द्र मिल मोक्ष कल्याणक करि फिर स्वर्ग सिधायो ॥ ॥ आ० ३ ॥ लखके श्री निर्वाण भूमि हम वदत मन वच कायो। सेवक तारो अर्ज करत है वार वार सिर नायो ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ कजरी ॥

अब मोहे तारो पारशनाथ ॥ अब० ॥टेर॥ अश्वसेन वामाजीके नन्दन, तीन भुवनके नाथ ॥ अब० १ ॥ पोस वदी दसमी दिन जायो, दिशी कुमरी सँग साथ ॥ अब० २ ॥ सेवककी अरजी पर मरजी, लज्जा तुम्हारे हाथ ॥ अब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

अब मोहे तारो वीर जिनन्द ॥अब०॥टेर॥ सिद्धारथ त्रिशलाजीके नन्दन वर्द्धमान जिन

चद ॥ अव० १ ॥ शासन नायक शिव सुख दायक श्री जिन आनन्द कन्द ॥ अव० २ ॥ सुन्दर सूरत मोहन मूरत देखत होत आनन्द ॥ अव० ३ ॥ वे कर जोड़ी अरज करत हैं चाकर माणिकचन्द ॥ अव० ॥ इति ॥

॥ ठुमरी ॥

महावीर तोरी समवसरणकी रे ॥ मैं जाऊँ वलिहारी, वलिहारी जाऊँ वारी ॥महा०॥टेर॥ त्रण गढ़ ऊपर रे, तरत विराजे रे, बैठी छे पर्षदा वारे, वलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० १ ॥ वाणी योजन रे, सहूने सांभल रे, तारया छे नर नै नारी । वलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० ॥ ॥ २ ॥ आनन्द घन प्रभु रे, इन परि बोले रे, आवा छे गमन निवारी, वलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० ३ ॥ इति ॥

॥ देशी ॥

सखिरी पावापुर महावीर हां जी चलो व-

दिये ॥ हाजी० ॥ टेर ॥ सुन्दर जल भर सरोवर सोहे, मानो गंगा नीर ॥ हाजी० १ ॥ जल बिच कमल कमल बिच देहरा, बिच विराजे महावीर ॥ हाजी० २ ॥ सोनेकी झारी गंगाजल पाना, चरण पखारूं महावीर ॥ हाजी०३॥ समोसरणमें सब मिल आये, बोलो जय जय वीर ॥ हाजी० ४ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

पावापुरमें स्वामी, भेट्या वीर जिनन्दरी ॥ पा० ॥ टेर ॥ सिद्धारथ कुल कमल प्रकाशक, उदयो ज्ञान दिनन्दरी ॥ पा० १ ॥ कोटिक भान समान अंग छवि, आनन्दराको कन्दरी ॥ पा० २ ॥ पद पङ्कज निसिवासर प्रभुके, सेवै चौसठ इन्दरी ॥ पा० ३ ॥ दीन दयाल दयानिधि साहब, चौविसमा जिन चन्दरी ॥पा०४॥ चरण कमलकी मैं सेवा चाहूं, हर्ष धरि हर्षचन्दरी ॥ पा० ५ ॥ इति ॥

॥ वेहाग ॥

वीर प्रभु हमको पार उतारो, मै तो आयो सुजस सुन थारो ॥ वी० ॥ सिद्धारथके कुल रवि उदयो, त्रिसला मात उदारो। कंचन वरण सुकोमल जाको, चन्द वदन मनोहारो ॥ वी० १ ॥ सुर नर इन्द्र नरेन्द्र सबे मिल, पूजत चरण हजारो । अधम उधारण नाम श्रवण सुनि, उमग्यो प्रेम हमारो ॥ वी० २ ॥ अष्ट कर्म रिपु हमने सतायो, करिहूं नाथ पुकारो । तीन लोकमें राज तुमारो, विनती आज सुधारो ॥ वी० ३ ॥ भव दधि राह चलत कुमती-गण पकड्यो हाथ हमारो । चार योधा मिल मोकूं विगाड्यो दखल न माने तिहारो ॥ वी० ॥ ४ ॥ मन दुख दूर करो सुख पूरो, गाऊंगो सुजस तुमारो । कपूरचन्द जिन वर मुख देख्यो, धन धन भाग्य हमारो ॥ वी० ५ ॥ इति ॥

॥ धन्याश्री ॥

जगतमें कौन किसीका मीत ॥ज०॥ मात तात और जात सजन से, काहे कुं रहत नि-चीत ॥ ज० १ ॥ सबही अपने स्वारथके हैं परमारथ नहि प्रीत ॥ ज० २ ॥ स्वारथ विन सगो नहीं होसी, मिथ्या मनमें चीत ॥ज०३॥ उठ चलेगो आप अकेले, तुहीं सु सुचीत ॥ ज० ४ ॥ को नहीं तेरो तु नहीं किसको, एह अनादि रीत ॥ ज० ५ ॥ तोसे एक भग-वान भजनकी, राखो मनमा नीत ॥ ज० ६ ॥ ज्ञानसार कहे ए धन्याश्री, गावो अनादि गीत ॥ ज० ७ ॥ इति ॥

॥ गजल ॥

तूही जिनन्द चन्द मेरी आपदा हरो । कर पाश आश पूर सुख सपदा करो ॥ तू० ॥ मैं नाथ तोय जानके सरण तो पड़यो । मैं हूं अ-जान दीन सिर हाथ तो धरो ॥ तू० १ ॥ कर

कहर दूर महर कर कम्म कु हटा। कर पार तार वेग तीय रात दिन रटा ॥ तू० २ ॥ दर्श तेरो देख पाप पुंज तो घटा। अलाभका जो सौदा खुद आपसे पटा ॥ तू० ३ ॥ जो जानो आप आपको निगाह तो करो ॥ तू० ४ ॥इति॥

॥ पुन ॥

महाराज शरण तुमसे लागी तुमसे लागी वनता रागी ॥ म० ॥ टेर ॥ क्षण भंगुर छै माया जगतनी मागूं शरण हूं ते त्यागी ॥ म० ॥ १ ॥ सुन्दर उपदेश अमृत पीता नाण उदय बीज जो जागी ॥ म० २ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

तुम बिना और न जाचूं। जिनन्दा प्रभु ॥ तु० ॥ मैं तेरे मन निश्चय कीनो; एमा कुछ नहीं काचू ॥ जि० तु० १ ॥ तुम चरण कमल षटपद मन मेरो, अनुभव रस भरि चाखूं। अन्तरङ्ग अमृत रस चाख्यो एह वचन मन

साचू ॥ जि० तु० २ ॥ जस प्रभु ध्यायो, महारस पायो और २ से नहिं राचू । अन्तरङ्ग फरस्यो, दरशन तेरो । तुझ गुण रस संग माचुं ॥ जि० तु० ३ ॥ इति ॥

॥ रेखता ॥

अजी सुनो जिनराज जी तुम दिल लगाय के । दोनो मिलाकर दस्त मैं कहता सुनायके ॥अ० ॥ टेर ॥ जेवर जो मेरा सिरका कुमतिने ठग लिया । उसके सिवाय नरकमें पटके है जायके ॥ अ० १ ॥ मुशकिल करो आसान ए जिनराज तु मेरा । लेता हूं तेरा नाम मैं दुविधा हटायके ॥ अ० २ ॥ छूटेंगे कमफंदसे मुझको यक़ीन है । दर्शन करेंगे आपके मन्दिरमें आयके ॥ अ० ३ ॥ ले जाफरान मुस्क और संदल घसेंगे हम । पूजों तुमारे कदमको गरदन झुकायके ॥ अ० ४ ॥ ताजा अनेक रंगके लावेंगे फूल हम । प्रभुको पहनावेंगे जेवर गुथायके ॥

॥ अ० ५ ॥ शिवचन्द कहे इजावसे मानिन्द लोहेके हम । लोहेसे कर कंचन कदम पारस वैठायके ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी ॥

शान्ति करो महावीर जिनेश्वर, कोटिक कष्ट हरो परमेश्वर ॥ शा० ॥ पूरण ब्रह्म परम पद धारक, वीतराग जगदीश विश्वेश्वर ॥शां०॥ ॥ १ ॥ अगम अगोचर देव निरजन, अघमोचन जगनाथ तारेश्वर ॥ शां० २ ॥ भव आताप निवारक जाणों, शरण आयो तारो दानेश्वर ॥ शा० ३॥ कुमुद चन्द्रके निज अन्तरजामी, शिव कर्त्ता महावीर बालेश्वर ॥ शा० ४ ॥इति॥

॥ पुनः ॥

(अरे हारे) गावो २ खुशीसे गावो सभी गुण पार्श्व प्रभुः महाराजके ॥ गा० टेर ॥ हिल मिलके गावो सब खुशियां मनाओ, आये हैं दिल वहारके ॥ गा० १ ॥ पूजन कराओ और

प्रेम बढ़ाओ, नेना दरसते दीदारके ॥गा० २॥ भेटो चरण और लेलो शरणको, चरण पड़ो करतारके ॥ गा० ३ ॥ तन मनको वारो और धनको निसारो, कहता शियल पुकारके ॥गा०॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ख्याल ॥

महावीर स्वामी, आप विराजो चन्दन चौकमें (बादल महलमें) ॥ म० ॥ दूर देशसे शिखर दीखे, शिखरकी छवि न्यारी ।.हाथी घोड़ा रथ पालखी, मनमें बहुत हुसियारीजी. ॥ म० १ ॥ दूर देशसे आये यात्री, पूजा आन रचावे । अष्ट द्रव्य पूजामें लावे, मन वछित जल पावेजी ॥ म० २ ॥ थारो सेवक अरज करेछे, सुण ज्यो महावीर स्वामी । मोपे किरपा ऐसी कीजे, जावे मोक्ष निसानीजी ॥ म० ३ ॥इति॥

॥ देशी ॥

(म्हारा) अजित जिनन्द प्रीतड़ी, सु

मुझे न गमे हो वीजानो संगके ॥अजित० टेर॥ मालती फूलें मोहियो, किम वैसे हो वाँवल तरु भृंग के ॥ अ० १ ॥ गंगा जलमां जे रम्याँ किम छिल्लर हो रति पामें मरालके ॥ अ० २॥ सरवर जलधर विना नवि, चाहे तो जग चातक वालके ॥ अ० ३ ॥ कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकारके ॥ अ० ४ ॥ ओछा तरुवर नवि गमें, गिरुआ सू हो होय गुणनो पारके ॥ अ० ५ ॥ कमलिनी दिन कर कर ग्रहे, वलि कुमुदिनी हो धरें चन्द्र सूं प्रीतके ॥ अ० ६ ॥ गौरी गिरीश गिरिधर विना नवि चाहें हो कमला निज चित्तके ॥ अ० ७ ॥ तिम प्रभु सू मुझ मन रम्यु, वीजा सूं हो नवि आवे दायके ॥ अ० ८ ॥ श्री नय विजय विवुध तणो वाचक यश हो नित २ गुण गायके ॥ अ० ९ ॥ इति ॥

॥ पुन ॥

भव्य नित पीजो धीधारी। जिन वाणी सुधासम जानके नित्य पीजो धीधारी ॥ टेर ॥ वीर मुखारविन्दसे प्रगटी, जन्म जरा गति टारी। गौतमादिक उर घर व्यापी, यह परम सुरुचि करतारी ॥ भव्य० ॥ सलिल समान क-लिल मल भजन, बुधमन रजन हारी। भजन विभ्रम धूल प्रभजन, मिथ्या जलद निवारी ॥ भव्य नित्य १ ॥ कल्याण तरु उपवन धरनी, यह तारण भव जल नारी, बन्ध विदारण पैनी छैनी, मुक्ति निसेनी सम्हारी ॥ भव्य० २ ॥ स्वपर स्वरूप प्रकाशन कु यह, भानु कला अ-विकारी, मुनि मन कुमुदिनी मोदन शशि भी भा सुख सुमनस वारी ॥ भव्य० ३ ॥ जाकू सेवत वेवत निज पद, नशत अविद्या सारी। तीन लोक पद पूजत जाके जानत जग हित-कारी ॥ भव्य ४ ॥ कोटि जीव सम महिमा

जाके, कह न सके पवधारी। आनन्द घन प्रभु केम कहे यह, अधम उधारण हारी ॥ भव्य० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ २४ तीर्थंकरोंके लाछनका स्तवन ॥

चरणन चिन्ह चितारो चितधर। जिन वन्दन चौवीस करो ॥ टेर ॥ ऋषभ वृषभ गज अजितनाथके संभवके पग वाजी सरो। कपि अभिनदन कौंच सुमतिके, पद्म २ के पाय सरो ॥ जि० १ ॥ स्वस्तिक सुपारस चंद २ के, पुष्पदतके मच्छ सरो। सुर तरु शीतल चरण कमल, श्रेयास गेंड़ा सोपाय सरो ॥ जि० २ ॥ मगर वासु पूज्य बराह विमलके, स्येन अनन्तके पाय सरो। धर्म वज्रांकुश शांति हरिण युत, कुंथ अजा अर मीन सरो ॥ जि० ३ ॥ कलश मल्लि, कूर्म मुनि सुव्रत, नमि कमल शतपत्र सरो। नेमि शख फणि पार्श्व वीर हरि, लखि

 आनन्द करो ॥ जि० ४ ॥ इति ॥

॥ छन्द ॥

उपम कनकदेव, उपम न काहू तेव, चूल हेम तेम जेम, ज्योति मोती नीरकी । लंछन हजार आठ, करम दल दीना काट, योजन गमन रूप, वाणी एक वीर की ॥ १ ॥ पत्थर फटिक माहि, ताउ पै विराजमान, वचन प्रकाशे प्रभु, घुट जैसे चीर की । तरण तारण देव, सुरपति सारे सेव, ऐसी महिमा लोकमें, विराजे महावीर की । ॥ २ ॥ चौवीसमा महावीर, सूर-वीर महाधीर, वाणी मीठी दूध चीर, सिद्धा-रथ नन्द है । नाग जैसो नार जाने, घटमें वै-राग आने, योग लियो जग माहि, छोड़ा मोह फन्द है ॥ ३ ॥ चौदह हजार सत, तार दिया भगवंत, कर्मोंका किया अत, पाम्या सुख कन्द है । भणै मुनिचन्द्र भाण, सुनो भविक गण, महावीर किया ध्यान उपजै आनन्द है ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणजीका स्तवन ॥

वीर जिन सिद्ध थया, सघ सकल आधारो रे । हिव इण भरतमा, कुण करिस्यै उपगारो रे ॥ वी० १ ॥ मारग दर्शक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान । भाव दया सागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ वी० २ ॥ नाथ विहूणी सेणा ज्युं रे, वीर विहूणोरे सघ । साधे कुण आधारथोरे, परमानन्द अभगोरे ॥ वी० ३ ॥ मात विहुणा वालुआरे, उरह पहर अथड़ाय । वीर विहूणा भवि जनोरे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वी० ४ ॥ सशय छेदक वीरनोरे, विरहते केम खमाय । जे देखि चित्त उल्लसेरे, ते विन किम रहीवायोरे ॥ वी० ५ ॥ निर्ज्जामिक भव समुद्रनो रे, भव अड़वो सत्यवाह । ते परमेश्वर विन मिल्यारे, किम वाधे उच्छाहोरे ॥वी० ६॥ वीर थका पिण सूत्र नोरे, हु तो परम आधार । हिव इहां श्रुत आधर छैरे, अथवा जिन प्र

सारोरे ॥ वी० ७ ॥ इण काल सर्व जीवनोरे,
आगम थी आनन्द । ध्यावो सेवो भविजनारे,
जिण पड़िमा सुख कन्दोरे ॥ वी० ८ ॥ गण
धर आचारज मुनिरे, सहू ने इण विधि सिद्ध ।
भव भव आगम सगथीरे, देवचन्द पद लीधो
रे ॥ वी० ६ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणजीकी आरती ॥

जय जगजीश्वर अति अलवेशर । वीर
प्रभुराया ॥ पतित उधारण भव भय भजण ।
बोधवीज दाया ॥ (जय २ जिन राया । आ-
रति करु मन भाया । होय कचन काया) ।ज०।
॥१॥ चत्रीकुण्ड नगर अति सुन्दर । सिद्धारथ
राया । सुदि आषाढ़ छठके दिवसे । त्रिशला
कुख आया ॥ ज० २ ॥ चवद सुपन देखी अति
उत्तम । निज प्रीतम भाषे । अरथ भेद सहु
निश्चे करनें । जिनगुण रस चाखे ॥ ज० ३ ॥
सुदि तेरस दिन उत्तम । सहु ग्रह उच्च

वे। जन्म देई दिश कुमरी सहुना आसन पावे ॥ ज० ४ ॥ उच्छव कर जावे निज थानक। इद्र सहु आवें। मेरु शिखर पर स्नात्र होच्छव करि आनन्द पावै ॥ ज० ५ ॥ वसुधारा वृष्टि कर सहु सुर। निज थानक जावे। सद्धारथ करे जन्म महोच्छव। अचरज सहु पावें ॥ ज० ६ ॥ कचन बरण तेज अति दीपत। हरि लञ्छन छाजे। कुल इक्ष्वाकु अङ्ग सहु लक्षण। शशी ज्युं मुख राजे ॥ ज० ७ ॥ दान सम्वच्छर दे प्रभु लेवे चारित्र सुखदाई। मार्ग शीर्ष दशमी वद पचे। उत्तम तरु पाई ॥ ज० ८ ॥ बार बरश छद्मस्थ पणामें। दुक्कर तप पाले। माधव सुद दशमीके दिनकुं। दोष सहु टाले ॥ ज० ९ ॥ केवल पाय सबी सुर सङ्ग। पावापूर आवे। गुणगण संकुत देशनां देके। सङ्घ सहु पावे ॥ ज० १० ॥ भूमंडल विच बहुत जीवकु अविचल सुख देवे। नर

सारोरे ॥ वी० ७ ॥ इण काल सर्व जीवनोरे, आगम थी आनन्द । ध्यावो सेवो भविजनारे, जिण पड़िमा सुख कन्दोरे ॥ वी० ८ ॥ गण धर आचारज मुनिरे, सहूने इण विधि सिद्ध । भव भव आगम सगथीरे, देवचन्द पद लीधो रे ॥ वी० ६ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणजीकी आरती ॥

जय जगजीश्वर अति अलवेशर । वीर प्रभुराया ॥ पतित उधारण भव भय भंजण । बोधबीज दाया ॥ (जय २ जिन राया । आरति करु मन भाया । होय कचन काया) ।ज०। ॥१॥ क्षत्रीकुण्ड नगर अति सुन्दर । सिद्धारथ राया । सुदि आषाढ़ छठके दिवसे । त्रिशला कुक्ष आया ॥ ज० २ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम भाषें । अरथ भेद सहु निश्चे करनें । जिनगुण रस चाखे ॥ ज० ३ ॥ चैत्र सुदि तेरस दिन उत्तम । सहु ग्रह उच्च

वे। जन्म देई दिश कुमरी सहुना आसन पावे ॥ ज० ४ ॥ उच्छव कर जावे निज थानक। इन्द्र सहु आवे। मेरु शिखर पर स्नात्र होच्छव करि आनन्द पावै ॥ ज० ५ ॥ वसुधारा वृष्टि कर सहु सुर। निज थानक जावे। नच्छारथ करे जन्म महोच्छव। अचरज सहु पावै ॥ ज० ६ ॥ कचन वरण तेज अति दीपत। हरि लञ्छन छाजे। कुल इक्ष्वाकु अङ्ग सहु लक्षण। शशी ज्यु मुख राजे ॥ ज० ७ ॥ दान सम्वच्छर दे प्रभु लेवै चारित्र सुखदाई। मार्गशीर्ष दशमी वद पत्ते। उत्तम तरु पाई ॥ ज० ८ ॥ बार वरश छद्मस्थ पणामे। दुकर तप पाले। माधव सुद दशमीके दिनकुं। दोष सहु टाले ॥ ज० ६ ॥ केवल पाय सबी सुर सङ्ग। पावापूर आवे। गुणगण लंकृत-देशना देके। सङ्घ सहु पावै ॥ ज० १० ॥ भूमंडल विच वहुत जीवकु अविचल सुख देवै। नर

सुर इन्द्र सभी मिल पूजें । जगमें जस लेवे ॥ ज० ११ ॥ चरम चौमाशि पावापुरि करिके । अन्त समय जाणी । हस्ति पालको शुक्र शालमे । सोलं पहर वाणी ॥ ज० १२ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या । एक चित्त गुण धामी । कातिक कृष्ण अमावसके दिन । शिव कमला पामी ॥ ज० १३ ॥ इन्द्रादिक निर्वाण महोच्छव । करि प्रभु गुण गावे । देव मुखे गणधर गुरु गोतम सुणनें पछतावे ॥ ज० १४ ॥ वीतराग गुण मनमें धारो अनित्य भाव भावे । केवल ज्ञान प्रगट हुय ततखिण । सुर नर गुण गावे ॥ ज० १५ ॥ पञ्च कल्याणक शासन पतिको । आरति ज्यो गावे । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलें जब । मोहन गुण पावे ॥ ज०१६॥ इति पञ्च कल्याणक आरती सपूर्णम् ॥

॥ श्रीचक्रेश्वरीकी आरती ॥

जय जय जिनपद सेवन कारक, जय जय

जगढवे ॥ ए आकणी । अहनिशि तुभ पढ समरन, दिल विच ध्यान धरे ॥ जय० १ ॥ भविजन वञ्छित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अवे ॥ ॥ जय० २ ॥ वसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वृन्दे ॥ जय० ३ ॥ पचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे ॥जय० ४ ॥ ऋद्धि वृद्धि नित प्रति सेवक आपे, आनन्द सद्य धरे ॥ जय० ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीयत्तराजकी आरती ॥

जय जय ऋषभ पदाम्बुज सेवक, जय जय यक्षराया, भविजन सुख दाया ॥ ज० ॥ कामगवी जिम वंछितदायक, कचन वरण सुहाया ॥ ज० १ ॥ सकट विकट निवरण कारण, वर कुंजर चढ़ि आया ॥ ज० २ ॥ उदधि भुजें करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि गोमुख सुरराया ॥ ज० ३ ॥ आरत हरवा करत आरति, श्रीसघ हुलसाया ॥ ज० ४ ॥ इति ॥

॥ श्रीभैरवजीकी आरती ॥

जनके उद्यात भेरू समकित धारी । शान्ति मूरत भवियण सुख कारी ॥ उज्ज्वाला केश सिंदूर तिलक रविके । केसरके तिलक सोहे उगो मानो रविके ॥ जै० १ ॥ सिर पर मुकुट कुंडल काने शोभता । गल साहे धुक धुको हिये हार मोहनो ॥ जं० २ ॥ छड़ी लिये हाथमें देहराके बारणा । पूजा करे नरनारी रखवारीके कारणा ॥ जं० ३ ॥ रोग शोक दूर करो वैरीको भगाय दो । बालकोंकी रक्षा करो अन्नधन पुत्र दो ॥ जै० ४ ॥ पूरण कल्पतरू चाहे फल दाता है । पूजा लेवै नित प्रति रंगे रंग माता है ॥ ॥ जै० ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीगौतमस्वामीकी आरती ॥

जय जय गणधारा, गोतम गोत्र इन्द्रभूप नामे, भवियण हितकारा ॥ ज० ॥ अष्टापद गिरो भानु आलम्बन, चौविश जिन ध्याया ।

पन्द्रह सौ तिरोत्तर तापस, ते सहु समझाया ॥ ज० १ ॥ दी दीचा जिनको निज करसे वे शिवपद पाया । अंत वीर संग नेह त्याग कर, केवल उपजाया ॥ ज० २ ॥ पद्मोदय कहे बारह वर्ष पर, पंचम गति पाई । दिलीप चरण सेवे कर जोडी । जय शिवपद दाई ॥ ज० ३ इति ॥

॥ श्रीसुधर्म्मा स्वामीकी आरती ॥

जय २ पटधारी, भव्य निस्तारी, शिव सुख दातारी ॥ ज० ॥ पंचम गणधर सुधर्म्म स्वामी, पटधर पद पाया । वीर प्रभु निर्वाण गये पर, शासन दीपाया ॥ ज० ज० १ ॥ जिन भाषित त्रिपदी अनुसारे, पूरव विस्तारे । द्वादश अङ्ग उपदेश करीने, भवियणकुं तारे ॥ ज० २ ॥ निज गुरुसेती बीस वर्ष पर, पाम्यो शिव थाने । पद्मोदय गुरु चरण पसाये, दिलीप लहे ज्ञाने ॥ ज० ३ ॥ इति ॥



लघु-शान्ति स्तव।

शान्ति शान्तिनिशान्त, शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य। स्तोतु शान्तिनिमित्त, मन्त्रपदै शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा,—सम्पत्तिसमन्विताय श-स्याय। त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नम शान्ति देवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसपूजिताय निजिताय। भुवनजनपालनोद्यत,—तमाय सतत नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, क राय सर्वाऽशिवप्रशमनाय। दुष्टग्रहभूतपिशाच,—शाकिनीना प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममन्त्र,--प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुते जनहित,-- मिति च नुता नमत त शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये ! परापरैरजिते !। अपराजिते !

जगत्या, जयतीति जयावहे ! भवति ! ॥ ७ ॥
सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमंगलप्र-
ददे ! साधूना च सदा शिव,--सुतुष्टिपुष्टिप्रदे
जीया ॥ ८ ॥ भव्याना कृतसिद्धे !, निर्वृति-
निर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभयप्रदाननि-
रते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥
भक्ताना जन्तूना, शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि !
सम्यग्दृष्टीनां धृति,-रतिमतिबुद्धि प्रदानाय
॥ १० ॥ जिनशासननिरताना, शान्तिनताना
च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो, -
वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलि-
लायलविषविषधर,---दुष्टग्रहराजरोगरणभयत
राक्षसरिपुगणमारी,--चौरेतिश्वापदादिभ्य १२॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शान्ति च कुरु
कुरु सदेति । तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु
स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति !
गुणवति ! शिवशान्ति,-तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु

कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रां, ह्रीं ह्रूं ह्र य च ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर,- पुरस्सर सस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति नमता, नमो नम शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरिदर्शित, मन्त्रपदविदर्भित स्तव. शान्ते । सलिलादि भयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैन पठति सदा, शृणोतिभावयति वा यथायोगम् । स हि शान्तिपद यायात्, सूरि श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गा क्षय यान्ति, छिद्यन्तेविघ्न-वल्लय । मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधान सर्वधर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥१९॥

